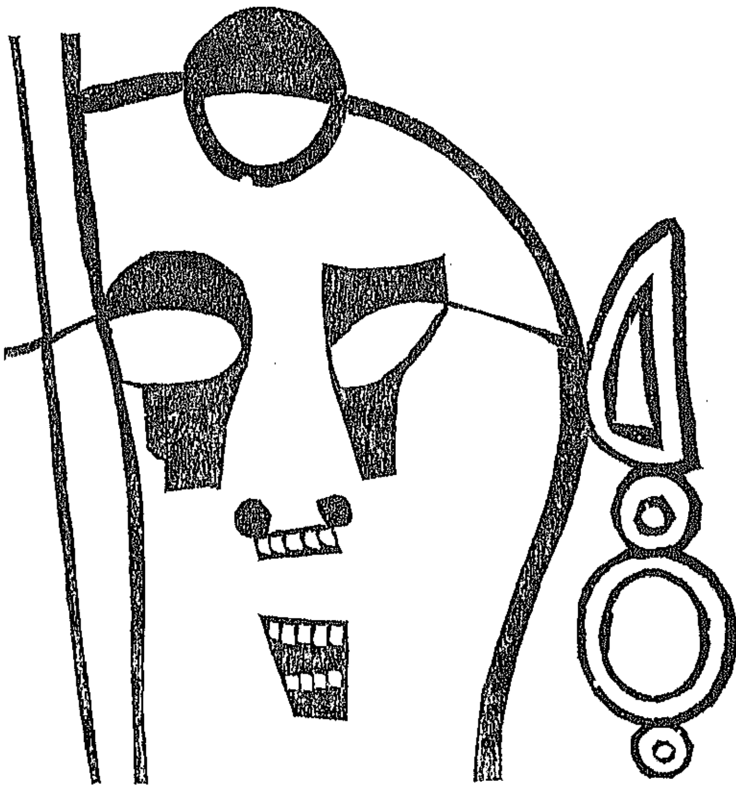
नाटकक लेल नाटकक लेल
नाटकक लेल नाटकक लेल
नाटकक लेल नाटकक लेल

नाटक क लेल

नाटकक लेल नाटकक लेल
नाटकक लेल नाटकक लेल
नाटकक लेल नाटकक लेल



नचिकेता

नाटक क लेल

नचिकेता

मिथिला दर्शन प्राइवेट लिमिटेड
कलकत्ता-४५

● प्रथम संस्करण :
१९७४ ई०

● प्रकाशक:
मिथिला दर्शन प्राइवेट लिमिटेड,
१६२/ए/१३२, लेक गार्डेन्स,
कलकत्ता-७०००४५

● अन्यतम वितरक :
मैथिली रंगमंच
१६२/ए/८५,लेक गार्डेन्स,
कलकत्ता-७०००४५

● मुद्रक :
सिंह प्रेस, कलकत्ता-७०००४५

● मूल्य :
तीन टाका

हमर शिक्षा-जगत क ध्रुव नक्षत्र एवं वरेण्य शिक्षागुरु

आचार्य श्री प्रबोध बी० पंडित क

कर-कमल मे---

—नचिकेता

नाटक क लेल

प्रथम अभिनय-रजनीक व्यवस्था कैलन्हि

मैथिली रंगमंच

थियेटर सेंटर, कलकत्ता मे रविदिन (६-१०-१९७४ई०) कँ

और एहि साहसिक प्रयास मे भाग लेनिहार
रंगमंच क साहसी कलाकार लोकनि भेलाह—
श्री कान्त मंडल (कमल), रामलोचन ठाकुर (अनिरुद्ध)
उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' (नाट्यकार), कुणाल (सूत्रधार),
गिरीशकान्त चौधरी (अफसर), एवं श्रीमती चन्द्रकला 'किरण' (सती)॥

और निर्देशन श्रीकान्त मंडलक,

आलोक विमल दासक, संगीत सुनील बनर्जीक,
रूपसज्जा अजय घोषक एवं मंच-व्यवस्थापन कुणालक॥
सूत्रधार भेलाह रामप्रसाद राय॥

नचिकेता

नाटक क लेल

[मंच पर नीलाभ आलोक पसरल अछि। दू पुरुष आ' एक नारी कें उच्चासन पर बैसल देखना जाइत अछि। पात्र-पात्री सभक आकृति अस्पष्ट रूपें दृष्टि-गोचर भ' रहल अछि। मंच क अग्र भाग मे आरो एक व्यक्ति ठाढ़ दर्शक दिसि देखि रहल छथि। हिनक मुख पर अलपरेख स्थापित रहबा क कारणें हिनक आकृति स्पष्ट देखना जाइछ—चेहरा ने आकर्षक, ने विकर्षण क उत्पादक; मध्यवयस्कता क चेन्ह आँखि, भौं आ' केस पर छन्हि। ओ कनेक और आगाँ बढ़ि अबैत छथि। हिनक संगहि संग अलपरेखो अगुअबैत अछि। हिनका नाट्यकार नाम देल जा सकैत अछि।]

नाट्यकार—ओना एहि नाटक मे हमर भूमिका किछु नहि अछि। हमर काज भेल ओहि श्रमिक जकाँ, जे सूत सँ सूत जोड़ैत अछि। ई मंच एकटा बाजार थिक—पात्र सब सूत—आ' हम वस्त्र-निर्माता। एहि कर्मकाण्ड क लेल जे लोकनि पाइ लगौलन्हि ओसब छथि मालिक आ' अपने लोकनि भेलहुँ ग्राहक, खरीददार। नीक लागै त कीनब, नहि त

हम कतबो कम दाम हाँकी, अहाँ मुँह घुरा कए चलि देब। (कनेक चुप्पी लगा कए) ओना अहाँ कें लागि सकैत अछि—जे हमर उपमा नीक नहि छल। मुदा ताहि लेल हमरा ने चिन्ता अछि ने दुःख। कविता क छन्द आ' शब्द बिना अर्थ क अहाँ कें आ' हमरा दू दंडक लेल धनिक क' दैत अछि। भ' सकैत अछि, कवि क कण्ठें हमर ई दुर्बल उपमा बदलि कए अभिजात भ' उठत। मुदा हम, हमर दुर्बल माय, रुग्ण पत्नी, भूखल सन्तान आ' अशेष संग्राम कें कोना छोड़ू! तैं हमर पात्र सब दुर्बल छथि, हिनका सभक कथनी-करनी सबटा दुर्बल छन्हि। हिनका सभक जीवन क संगीत, आलोक आ' कविता—सब किछु दुर्बल छन्हि। (थम्हि कए दर्शक कें आश्वास देबाक मुद्रा मे) मुदा ताहि लेल घबड़ाउ जुनि। हम-अहाँ नाटक देखैत छी हँसबा क लेल, नहि त उपहास क लेल। तैं आनक दुर्बलता, आनक जिनगी क विफलता, अपना बिना लड़ने आनक संग्राम—ई सब किछु देखबा मे हमरा सब कें बड्ड नीक लगैत अछि। तैं एहि नाटक मे हम सब किछु देखायब। (थम्हैत) आउ, अपन पात्र सब सँ अहाँ लोकनि कें परिचय करबा दी। (कहबाक संगहि संग तीनो पात्र अलपरेख सँ आलोकित भ' उठैत छथि।) हम अपना जनितें हिनका सब कें नीक सँ नीक पोशाक पहिरौने छी, हिनका सभक मुँह मे नीक सँ नीक भाषा देने छी—यद्यपि ईहो जनैत छी जे समय सब नीक मात्र कें छीनि लेबाक प्रयास करैत अछि। (ओ अगुआ कए बाम दिसि जा कए एकटा पुरुष-चरित्र कें दर्शक कें देखबैत कहैत छथि।) ई छथि कमल। (कहिये कए कमल दिसि देखैत छथि। कमलक मुख पर कोनो परिवर्त्तन नहि देखि कमलक भर्त्सना करैत कहैत छथि) कमल, उठू—लोग नमस्कारादि करैत अछि कि ओहिना……

कमल—(नाट्यकार क आदेशात्मक स्वर सँ चकित भए) हँ हँ…… (दर्शक वृन्द सँ) नमस्कार। हमर नाम थिक कमल।

नाट्यकार—से हम कहि देलहुँ।

कमल—कहि देने छी! ओ......

नाट्यकार—कियैक? अहाँ नहि सुनलहुँ की? कोन जगत मे पहुँचि गेल छलहुँ एतबा देर मे?

कमल—हम एकटा सपना देखैत छलहुँ।

नाट्यकार—बिना सुतनहि?

कमल—[म्लान रूपें हँसैत]सुतल के नहि अछि नाट्यकार? जागि कए क्यो कहियो सपना देखलक अछि? हम एकटा सुन्दर सपना कें कखनहु गढ़ैत छलहुँ, कखनहु चिखैत छलहुँ, कखनहुँ देखैत छलहुँ।

नाट्यकार—मुदा सपना की छल? की देखलहुँ?

कमल—कतय देखि पबैत छलहुँ नीक जकाँ? जखनहि चाहैत छलहुँ, जे आब घटनाक मोड़ एम्हर घुरा दी, तखनहि घटना दोसर दिसि चलि जाइत छल—ठीक जेना वास्तव मे भेल छल, [अकस्मात् सचेत भए] मुदा से हम कहब कियैक?

नाट्यकार—[कमलक मनोभाव कें बुझैत] कमल—आउ, हमसब एकटा सोझ सौदाक गप्प करी।

कमल—केहन सौदा?

नाट्यकार—अहाँक ई सपना ने कहियो पूरा हैत, ने घटना सँ पड़ा सकत। ई काँच सपना ल' कए ने अहाँ जागि सकब, ने सूति सकब। कमल, अहाँ ने पोखरि मे अमर हैब, ने बगीचा मे जीयब। मुदा अहाँ जौं अपन सपना बेची त हम कीन' लेल तैयार छी। [कमल किछु कहबा लेल उद्यत होइत छथि कि नाट्यकार हुनका बाधा दैत कहैत छथि] हम......हम बुझि रहल छी, अहाँ की पूछै चाहैत छी।

कमल—की?

नाटयकार—अहाँ पूछब—ई सपना किनने हमरा लाभ?

कमल—ठीक।

नाट्यकार—तखन सुनू! बिना लाभक क्यो सौदा नहि करैत अछि।

अहाँक सपना क शोषण क' कए तकरा सजा कए, नहि त तकरा नाङट बना कए उपस्थित भद्रमंडली कें देखबै चाहैत छी। जनिते छी, लोग सब चाहे सजल नहि त नाङट घटना आ नारी देखब पसिन्न करैत छथि।

कमल—बेस; त अहाँ की देब ?

नाट्यकार—हम अहाँक सपना आ' घटना ल' कए अहाँ कें सुता देब। हम देखि रहल छी, अहाँ बहुत दिन सँ निःस्वप्न निद्राक सुख नहि पौलहुँ। और हम अहाँ कें अमर क' देब आपन नाटकक पात्र बना कए। अहाँक नामक उच्चारणक संगहि आइ, सौ वर्ष बाद, वा हजारो युग बीतियो गेला पर लोग अहाँक सुख-दुःख आ' कविता कें पढ़त, सुनत, तकर आवृत्ति करत। मुदा तैयहु शेष नहि क' सकत तकरा। कहू, तैयार छी ?

कमल—अहाँ तत्तेक ने लोभ देखा रहल छी जे ......[माथ झुका कए] हम तैयार छी। [कहबाक संगहि संग मुख पर सँ अलपरेख विलीन भ' जाइत अछि।]

नाट्यकार—[दोसर पुरुष पात्र दिसि अगुआ जाइत छथि। हिनका ऊपर अलपरेख पहिनहि सँ पड़ि रहल छल] ई छथि अनिरुद्ध। [अनिरुद्ध दर्शक वृन्द क दिसि देखैत हाथ जोड़ैत छथि।] हिनक जीवनक किछु किछु वृत्तान्त हिनक मुँहे पर लिखल छन्हि। जेना, क्यो हिनका देखि कए ई बता सकैत अछि जे प्रकृति निर्दय रूपें प्रतिपल अनिरुद्ध कें अपन जाल मे रुद्ध करबाक चेष्टा कैने हैत—। की ? ठीक कहि रहल छी त ?

अनिरुद्ध—ठीके कहि रहल छलहुँ, मुदा अधे कहि कए रहि गेलहुँ। बाकी आधा ई अछि जे अन्त मे हारि कए प्रकृति हमरा मृत्यु दंड द' देलक।

नाट्यकार—से कोना ?

अनिरुद्ध—हमर सुख-शान्ति छीनि कए, घर-परिवार लूटि कए आब ओ हमरा मारै चाहैत अछि। हमरा कैन्सर भेल अछि आ' धीरें-धीरें हम

मृत्यु दिसि बढ़ि रहल छी। [हँसैत] मुदा, तकर माने ई जे ओ हमरा सँ जीतिये नहि सकल।

नाट्यकार—अनिरुद्ध, अहाँ कें देखि कए हमर मन मे लोभक दीपक जरि उठल अछि। एकटा खिस्सा मन पड़ि रहल अछि हमरा, जाहि मे क्यो पथिक रास्ताक किनार मे पड़ल एक गोट धर्षिता नारीक कान-नाक आ' हाथक गहना खोलि कए आपन जेबी मे धए बिना कोनो दुविधाक चलि देने छल।

अनिरुद्ध—[हँसि दैत छथि—उच्चस्वरें] और अहाँ हमर बाकी जे किछु अछि से सबटा लूटि कए आपन काज मे लगाबै चाहैत छी—सैह ने ?

नाट्यकार—हँ हम अहाँक अतीत कें कीन' चाहैत छी। कारण, हमर नाटक क दर्शक लोकनि कें पुरान घटना, पुरान वस्तु आ' पुरान लोग नीके लगैत छन्हि।

अनिरुद्ध--कारण, ओहि घटना, वस्तु आ' लोगक नाम 'पुरान' राखि लेल गेल अछि; नहि त हमर जे अतीत अछि से एखनहु वर्त्तमान अछि आ' भरिसक भविष्यो मे रहत। जाहि कारणें लोग दोसरा कें पिछरैत आ' खसैत देखि हँसैत अछि—देखैत नहि अछि जे ओ अपने कतय ठाढ़ अछि—एक डेग बाद की अछि, सैह कारणें लोग वर्त्तमान कें बिसरबाक चेष्टा करैत तकरा अतीत बना लैत अछि।

नाट्यकार—आ हम सैह भावना कें भाषा मे घोरि कए नाटक लिखैत छी। तखन कहू, अहाँ की लेब अपन अतीतक ?

अनिरुद्ध—किछु नहि। हमरा अतीत नहि चाही, हमरा चाही भविष्य। एकटा सुन्दर भविष्य, जाहि मे हमरा सनक अतीतक कोनो स्थान नहि हैत। अहाँ स्वच्छन्द हमर कथाक व्यवहार क' सकैत छी।

नाट्यकार—धन्यवाद, असंख्य धन्यवाद अहाँ कें। [तत्पश्चात् अगुआ जाइत छथि नारी चरित्रक दिसि] आ' ई छथि सती।

सती—[म्लान हँसी हँसैत] पुरुषक दम्भ आ' अभिमान क युद्ध मे जकर

सब दिन बलि चढ़ाओल गेल अछि—ओ सती।

नाट्यकार—से कियैक कहैत छी? अहाँक पतिदेवक संग त हमर परिचय छल। हम जतबाक जनैत छी, ताहि सँ त......

सती—अहाँ की जानब? कोना जानब? अहूँक आँखि पर त सैह परदा अछि—जे कोनो पुरुषक आँखि पर रहैत छैक।

नाट्यकार—[हँसैत] नहि; देखैत छी, अहाँ पुरुष नाम क प्राणिये सँ घृणा करैत छी।

सती—[उदास भए] मुदा हम एहन नहि छलहुँ। ई हमरा अपन जीवन, हमर चारूकालक पुरुषे सिखौलक अछि।

नाट्यकार—से कोना? हमर उत्सुकता बढ़ि रहल अछि।

सती—[व्यंग्य करैत] अहीं कियैक? सब दिन सब पुरुष नारीक देह आ' बात दुनूक लेऽ उत्सुक रहल अछि।

नाट्यकार—नहि, ताहि लेल नहि।

सती—तखन हमर जीवन क कथा सुनि कए अहाँ की करब?

नाट्यकार—जे अहाँ नहि क' सकलहुँ, सैह करब।

सती—की?

नाट्यकार—अहाँ क अभियोग कें हम जनताक अदालत धरि पहुँचा देब। जे दुःख अहाँक मन मे अहुरिया काटि रहल अछि अथवा एतय उपस्थित आरो कतेको नारीक भीतर घुलि रहल अछि—किन्तु जकरा प्रकाशित करबाक कोनो उपाय नहि, हम तकरा पुरुषक सामने उपस्थित करब।

सती—ठीक अछि। हजारो वर्ष सँ हम जे करबाक वृथा चेष्टा करैत आयल छी, से अहाँ करू। देखू—सफल होइ छी वा नहि।

नाट्यकार—बेस, त अहीं सँ शुरू करैत छी। कहू अहाँक की अभियोग अछि। कहू, अपन कथा।

सती—[नाट्यकार क दिसि सम्मति लेबाक दृष्टियें एक बेर देखैत माथ

झुका लैत छथि। पुनः धीरे-धीरे दर्शक दिसि देखैत] हमर कथा आ' हमर इतिहास पुरान अछि। ई मेल विश्वास आ' तकरा अन्याय-यज्ञ मे बलि चढ़ैबाक पुराण। [किछु काल धरि चुप रहि पुनः बजैत छथि] हमरहु, सब नारी जकाँ एक पुरुष मूर्त्तिक कल्पना छल। मने मन ओहि मूर्त्ति कें हम नेनपनहि सँ सजौने छलहुँ, माला पहिरौने छलहुँ, ताहि पर अपन देह, मन, धर्म आ विश्वास कें लुटा देबाक निःशब्द प्रतिज्ञा कैने छलहुँ।

नाट्यकार—ओ के छल ?

सती—नाम सँ की अबैत-जाइत छैक ?

नाट्यकार—देखबा मे........

सती—सेहो कोनो प्रश्न नहि भ' सकैत अछि। बस—एतबाक कहब बहुत हैत जे ओ पुरुष छलाह—पुरुष कें जे किछु रहबाक चाही, से सब किछु हुनका मे छलन्हि।

नाट्यकार—मानि लियह[कमल कें देखा कए]कमल सन।

सती—[कमल कें एक नजरि देखि कए] हँ; एहने।

नाट्यकार—[इंगित सँ कमल कें पास बजबैत कहैत छथि] कमल !

कमल—जी।

नाट्यकार—अहाँ कें सती देबी क कथा मे हिनक पति क भूमिका मे अभिनय करै पड़त।

कमल—[एक बेरि लोलुप दृष्टियें सती कें देखैत] ठीक अछि। [सतीक तीक्ष्ण दृष्टिक सामने माथ झुका लैत छथि।]

नाट्यकार—[सती क दिसि घुरि कए] हँ, त अहाँक कथा मे और के सब छथि ? आन-आन नारी आ' पुरुष-पात्र सँ परिचय कराबी त—

सती—नारी क्यो नहि, पुरुषे पुरुष छल। एक रहथि हमर बाबूजी, एक [कमल कें देखा कए] हिनक आफिसक सिनियर आफिसर आ' आरो एक गोटे रहथि—हिनक एक मित्र, पबित्र बाबू। और जे सब छलाह,

हमर कथा क लेल हुनका सभक कोनो प्रयोजन नहि ।

नाट्यकार—अहाँ क पिता केहन रहथि ? उमर कत्तेक छलन्हि ?

सती—इयैह अहीं सन छलाह। नाम किछुओ राखि सकैत छी।

नाट्यकार—बेस, तखन हमहीं अहाँ क पिता क भूमिका मे अभिनय करब ।

[अकस्मात् अनिरुद्ध दिसि दृष्टि पड़ैत] अनिरुद्धो त छथि— हिनको कोनो भूमिका······

सती—ध' लियह, ओ छथि पवित्र बाबू।

अनिरुद्ध—बेस ।

पहिल नाटक

सती—[किछु काल एकदम चुप्पी लगैबाक बाद] हमर कथा क पहिल अंक शुरू भेल छल ओही दिन, जाहि दिन हम बाबूजी क पास अपराधी भ' कए गेल छलहुँ। मंच सँ धीरे-धीरे कमल, अनिरुद्ध आ नाट्यकार निष्क्रान्त भ' जाइत छथि। मंचक पश्चदेश आलोकित भ' उठैछ। एक ड्राईंग रूमक आभास स्पष्ट भ' उठैत अछि, यद्यपि कोनो विशेष मंच-सज्जाक प्रयोजन नहि हैत।] मुदा हम जनैत छलहुँ जे हम कोनो अपराध नहि क' रहल छी। [चुप भ' जाइत छथि] बाबूजी तखन घर मे नहि रहथि। आ' तैं हम तखन अपन सजाओल एकटा बकसा सँ कैक गोट चिट्ठी बहार क' कए पढ़ि रहल छलहुँ। [कहैत कहैत सती पछुआ' कए टेबुलक पास पहुँचि, तीन--चारिटा पत्र उठा कए हाथ मे ल' कए पढ़बाक मुद्रा करैत छथि। पढ़बाक संगहि संग हुनक मुख सलज्ज भ' उठैत छन्हि। ओ एहि प्रेम-पत्र सभक एक-एक पंक्ति पढ़ैत रहथि आ' हँसि दैत रहथि। नेपथ्य सँ शंकर क भूमिका मे कमलक स्वर भासल आबैत छल' जेना क्यो चिट्ठी लिखैत-लिखैत तकरहि पढ़ि रहल हो।]

शंकर—[नेपथ्य सँ कनेक निम्न स्वरें] 'सती!' [कहबाक संगहि संग सती ओहि अज्ञात प्रेमीक प्रति बिनु किछु कहने प्रश्नात्मक भ्रू-भंगिमा करैत छथि] ओना हम ई नहि कहब जे अहाँ रूप मे तिलोत्तमा आ गुण मे लक्ष्मी छी। हम चाटुकार नहि छी।'

सती—[लज्जा कए] तखन की छी? ऐं?

शंकर—'मुदा, हम एतबहि कहब जे अहाँ जेह छी, जेहन छी—और क्यो हमरा लेल तेहन नहि अछि।'

सती—झूठ!

शंकर—'सत्ते कहैत छी, अहाँक पास आबै मे डर लगैत अछि।'

सती—कियैक?

शंकर—'डर एहि बात क जे सामने रहने अहाँ कें छूबाक एकटा अदम्य आकांक्षा हमर मन मे जागि उठैत अछि। डरैत छी, छूनहि सँ जौं हमर सबटा सपना टूटि जाय!'

सती—[जे चिट्ठी पढ़ैत रहथि, तकरा दहिना हाथ सँ बाम हाथ मे लैत, बाकी चिट्ठी दहिने हाथ मे धरैत दर्शक दिसि देखैत कहैत छथि] कियैक? हमरा सभक सपना एत्तेक सस्त अछि जे ओहिना टूटि जायत? [पहिलुका चिट्ठी टेबुल पर राखि दैत छथि आ' दोसर एकटा चिट्ठी ल' कए पढ़ै लगैत छथि] 'सती! पहिने हम सोचैत छलहुँ, अहाँ कें छूने सपना टूटि जायत।'

शंकर—[सतीक एतबा कहला क बाद संगहि-संग शंकर क कण्ठ-स्वर भासल अबैत अछि] 'मुदा आब जखन अहाँ कें छूबि कए देखलहुँ त पता चलल जे अहाँ कें स्पर्श करितहि हमर सपना एक-एक बेरि एक-एक रंगें रंगि कए आरो मोहक भ' उठैत अछि। आ' ओहि रंग क जादू मे ओभरा कए, संगीत क मूर्च्छना मे आबद्ध भए हमर वाक्य-हरण भ' जाइत अछि। हम तखन सबटा भाषा, सबटा कविता, सबटा शब्द बिसरि जाइत छी।'

सती—[निःशब्दप्राय रहि, धीरे-धीरे प्रश्न करैत छथि] आ' तखन ?

शंकर—'तखन सब किछु बिसरियहु कए एकहिटा वाक्य मन रहि जाइत अछि; एकहिटा वाक्य ठोर पर हजारो बेरि अबैत अछि। जनैत छी ओ की थीक ? [सती जानबाक भंगिमा से माथ डोलबैत छथि एवं कमल क संगहि संग कहैत छथि] हम अहाँ सँ प्रेम करैत छी। [एतबाक कहि किछु काल दुनू गोटे चुप्पी लगा लैत छथि। पुनः शंकर कहै लगैत छथि] आ' अहाँ क पातर मोलायम ठोर सँ बारम्बार इयैह वाक्य सुनबाक इच्छा होइत अछि।'

सती—[चिट्ठी दिसि देखैत, पुनः ताहि पर सँ दृष्टि हटाए] हम अहाँ सँ प्रेम करैत छी।

[सती शंकरक एहि वाक्य कें दोहराबैत छलीह कि नाट्यकार, अर्थात् सती क पिता मंच पर प्रवेश करैत छथि। सती कें विह्वल देखि हुनक पिता हुनका दिसि अगुआ' अबैत छथि।]

प्रजापति—की करैत छह बेटी!? ककरा सँ बात......[एतबा कहैत ओ प्रस्तरीभूत भ' जाइत छथि एवं सती क कथन शुरू भ' जाइत अछि।]

सती—[दर्शक सँ प्रजापति क परिचय देबा क हेतु कहैत छथि] ई छथि हमर जन्मदाता, हमर पिता। हिनक नाम भेल प्रजापति। सैयहु वर्ष सँ हम आ' हमरहि सन नारी लोकनि, जे नाटक क चरित्र भए लोग क मनोरंजन मात्र कैल अछि, ताहि नाटक क ईहो एक गोट पात्र छथि। [कहैत-कहैत सब चिट्ठी टेबुल क दराज मे राखि दैत छथि। पुनः कखनहु प्रजापति क पास जाए अथवा कखनहु मंच पर पद्चारणा करैत परिचय प्रदान करैत छथि] खजाना हिनक जतबाक विशाल अछि, मन ततबाक नहि। नहि मानैत छथि जे हम आकस्मिक आगन्तुक छी; कारण हुनक विचारें हम हुनक सृष्टि छी—हुनक सम्पत्ति सेहो [एतबाक कहैत-कहैत पुनः पहिनुकहि स्थान पर ठाढ़ भ' जाइत छथि।]

प्रजापति—[प्रस्तरीभूत अवस्था सँ स्वाभाविक भ' जाइत छथि आ' अपन

प्रश्न कें दोहराबैत छथि] की करैत छह बेटी ? ककरा सँ बात क' रहल छलह ? [कहैत-कहैत अपन अंगा खोलै लागैत छथि एवं बैग कें टेबुल पर राखैत छथि ।]

सती—नहि, ककरा सँ गप्प करब—ओहिना, अपनहि मने किछु...... । से जाय दियह। मुदा, अहाँ आइ एत्तेक देर सँ कियैक आबि रहल छी ? दुपहरियो क समय लंच करबा क लेल नहिये एलहुँ, की बात थीक ?

प्रजापति—[कुर्सी पर बैसैत] तोरे काज सँ...आइ...भरि दिन... ।

सती—हमर काज ? हमर कोन काज ? हम त अहाँ सँ कोनो काज द' नहि कहल अछि] ।

प्रजापति—[हँसैत] नहि; माने, काजे त हमरे छल, मुदा विषय छलह तों । [किछु काल चुप रहि कए] आइ तोरे लेल एक जगह बियाहक प्रस्ताव ल' कए गेल छलहुँ ।

सती—[सती विह्वल भ' जाइत छथि] की ?...हमर......बियाह ?

प्रजापति—[सती क दिसि बिनु देखनहि छोटछीन स्टेजक्राफ्ट करैत छथि] लड़का हमरा पसिन्न पड़ल। घर-खानदान क त गपे नहि। बिना पहिनहि सँ पता लगौने त हम कोनो काज करिते नहि छी—वैह सब, ठाकुर कम्पनी क मालिक छथि आ'...... ।

सती—[प्रजापति क दृष्टि कें आकृष्ट करबाक लेल हुनका टोकैत] मुदा, हम त...... ।

प्रजापति—इयैह कहबह ने जे तोरा एखन बियाह करबाक मन नहि छह। मुदा, एहि बेरि हम से सब नहि सुनबह। पहिने सुनलियह। तकर कारण छलैक। एक, तखन तोहर एम० ए० क पढ़ब शेष नहि भेल छलन्हु आ' दोसर, तेहन नीक वर क सन्धानो नहि पबैत छलहुँ। एखन त से सब किछु नहि अछि। एम० ए० क परीक्षा भ' गेल छन्हु आ' एहि बेरुक सम्बन्ध क त गपे नहि।

सती—[दृढ़ कंठें] मुदा, से जे हो—हमरा सँ ई बियाह करब नहि हैत।

प्रजापति--[उत्तेजित भ' उठैत छथि] नहि हैत माने ? सौ बेर हैत--हजार बेर हैत [सती कें दृढ़संकल्प तथा निरुत्तर देखि कनेक मोलायम स्वर मे] तों सब विना सोचने-बिचारने किछु कहि दैत छह़क--नहि हैत । हम पूछैत छी--कियैक नहि हैत ?

सती—कारण जानिये कए अहाँ की करब ?

प्रजापति—तकर माने ? भरि जिनगी खटलहुँ, कष्ट उठा कए तोरा खुआ-खेला कए एतेकटा बनौलहुँ, आ' तोरा पर हमर कोनो अधिकार नहि ?

सती—[म्लान हँसी हँसैत] बाबूजी, अधिकार दू तरहक होइत छैक--एक, जीवित प्राणी पर, आ, दोसर, निष्प्राण वस्तु पर ।

प्रजापति—तों कहै की चाहैत छह ?

सती—इयैह जे अहाँ हमरा अपन सम्पत्ति बुझैत छी, निष्प्राण वस्तु बुझैत छी ।

प्रजापति—के कहलक ई बात ?

सती—कहत के ? जीवित प्राणी पर अधिकार क संग किछु कर्त्तव्यो रहि जाइत छैक। अहाँ तकर कहियो पालन कैलहुँ ?

प्रजापति—तोहर अन्न-वस्त्र आ' शिक्षाक खर्चक जोगाड़ नहि कैलहुँ ?

सती—बस ? इयैह भेल अहाँक कर्त्तव्य ? ई सब त अहाँक पाइ कैलक ? हमर इच्छा, आदर्श आ' अनुभूति क कोनो खबरि कहियो रखलहुँ ? हमरा जखन नोखार भेल, ओहि भयानक राति सब मे जखन एकटा शिशु डरें यन्त्रणा सँ कानि उठैत छल--तखन भड़ैती सान्त्वना देबाक लेल छल नर्स। जखन परमात्मीयक स्नेह-छाया मे हमर अपन इच्छा आ' सपना सब कें गढ़बाक सजैबाक उपयुक्त समय छल—तखन हम पड़ल रहलहुँ प्राणहीन स्वप्नहीन कानवेन्टक बोर्डिंग मे ।

प्रजापति—हम ई सब किछु ने बुझैत छी, ने बुझै चाहैत छी । तकर अलावे, तोहर ईसब बातक संग बियाहक कोनो सम्बन्ध नहि ।

सती—सम्बन्ध छैक आ' अहाँ नीक जकाँ जनैत छी जे की थीक ओ

सम्बन्ध ! ई वियाह हैत एकटा बिजनेस कनसर्न सँ दोसर बिजनेस कनसर्न क। आ' ताहि मे बलि चढ़ाओल जायब हम।

प्रजापति—देखह सती—ई सब हम किछु नहि सुनै चाहैत छी। तोरा बियाह करै पड़तह [कहैत-कहैत टेबुल पर राखल आपन बैग क दिसि अगुआ जाइत छथि] आ' एत्तहि करै पड़तह। एहि मे कोनो अन्यथा नहि। [कहैत-कहैत किछु खोजबा क अभिनय करैत टेबुल क दराज खोलैत छथि अन्यमनस्क रूपें सती क प्रेम पत्र सब उठा लैत छथि। ई सब काज करैत-करैत कहै लगैत छथि] एखन देखि रहल छी, तोरा पढ़ा-लिखा कए भूल कैने छी। [एतबा कहबाक बाद ओ पत्र क दिसि ध्यान देत छथि। मुदा एम्हर सती अपन पिता क बात सुनैत आन दिसि मुँह घुरौने अपमानिता जकाँ ठाढ़ अछि। प्रजापति कें किछु काल निःशब्द देखि सती हुनका दिसि देखैत छथि। तावत ओहि चिट्ठी सभक भाषा पढ़ैत-पढ़ैत प्रजापति क मुखक भाव-भंगिमा बदलि जाइछ। ओ क्रोध सँ काँपै लागैत छथि।]

सती—[अगुआ कए ओहि चिट्ठी सब कें लेबाक प्रयास करैत] ई......ई सब हमर...... ।

प्रजापति—[सती क हाथ कें हँटा देत छथि] आब हम बुझलियह तोहर बियाह नहि करबा क रहस्य। तोहर एत्तेक साहस जे तों हमर खाए-पीबि कए हमरहि घर मे रहि एक टा लोफर क संग प्रेमलीला चलाबह।

सती—[नम्र स्वरें] बाबूजी ! हम अहाँ क खेलहुँ पीलहुँ से सत्त। मुदा ताहि लेल हमर प्रेम क अपमान नहि क' सकैत छी। [एतबा कहि माथ झुका लैत छथि]।

प्रजापति--[मुँह दुसैत] प्रेम ! प्रेम क तों की जनैत छह ? दूटा उपन्यास पढ़लह कि प्रेम क वेद पढ़ि लेलह ! [चिट्ठी सब हाथ मे धए पाकिट सँ लाइटर निकालि लैत छथि] कान खोलि कए सुनि ले एहि घर मे ई सब लीला नहि चलि सकैछ। [कहैत-कहैत लाइटर बारि कए चिट्ठी सब मे

आगि लगा दैत छथि । ।

सती—[चिट्ठी मे आगि लगाबैत देखि उन्माद-ग्रस्त जकाँ पास जाय चाहैत छथि] बाबूजी ! ई अहाँ की क' रहल छी ?

प्रजापति—[हाथ सँ सती कें धक्का द' कए हँटबैत] हँटि जाह ! [सती धक्का खा कए टेबुल पर जा कए खसैत छथि—दर्शक क विपरीत दिसि मुँह कैने। एहि मध्य मंच क आलोक किछु स्तिमित भ' जाइत अछि। मात्र प्रजापति क मुँह पर अल्परेख पड़ि रहल अछि। हुनक मुँह पर कुटिलता क रेखा—हाथ मे चिट्ठी जरैत-जरैत शेष भ' जाइत अछि। प्रजापति प्रज्वलित चिट्ठी सभक अन्तिमांश स्टेज पर फेंकि तकरा पैर सँ पीसि दैत छथि। आ' तकर बाद टेबुल पर पड़ल कनैत सती क दिसि घुरि कए कहैत छथि।] हम तोहर पिता छी। तोहर कामना की हैतह, की हैबाक चाही आ' तोरा की भेंटबा क चाही—से हमरा पता अछि। ने हम तोरा आगि मे कूदै देबह, आ' ने कोनो दुश्चरित्र-शैतान क जाल मे फँसे देबह। ई हम कथमपि नहि होमय देब।

[एतबा क कहैत-कहैत मंच मे शंकर क भूमिका मे कमल प्रविष्ट होइत छथि। हुनकहु मुँह पर अल्परेख पड़ैछ। ओ प्रविष्ट होइत-होइत प्रजापति क अन्तिम वाक्य सुनने रहथि। प्रविष्ट भ' कए ओ एक बेरि प्रजापति दिसि देखैत परिस्थिति क अनुधावन करबा क चेष्टा करैत छथि।]

शंकर—[सती क दिसि देखैत] की भेल सती ! [कमल क स्वर सुनितहि सती माथ उठा कए कमल क दिसि देखैत छथि एवं ओतय सँ तीव्रवेगें उठि कए कमल क प्रशस्त छाती मे आश्रय लैत कानैत छथि।] की भेल ! कहू त......[सती क माथ कें दुनू हाथ सँ उठा कए पूछैत छथि।]

प्रजापति—[एक बेरि कमल आ' एक बेरि आपन कन्या क दिसि देखैत] ओ ! तखन इयैह थिक ओ......

शंकर—[प्रजापति कें टोकैत] हँ, हमहीं छी ओ दुश्चरित्र शैतान। हमर

नाम भेल शंकर। [कहबाक संगहि संग मंच क स्तिमित आलोक तीव्र भ' उठैत अछि।]

प्रजापति—[गरजैत] नाम सँ हमरा कोनो प्रयोजन नहि।

शंकर—[हँसैत] तखन अहाँ हमरा शैतान कहि कए पुकारि सकैत छी।

प्रजापति—[दाँत तर ठोर दाबैत] डिसगस्टिंग ! हम तोरा सब सन नीच आदमी क लेल समय नष्ट नहि करै चाहैत छी। हमर बेटी कें छोड़ि दहक आ' निकलि जा हमर सीमा सँ बाहर।

शंकर—ने हम नीच छी, आ' ने हम ऊँच हैबाक दाबा करैत छी। अहाँ क बेटी कोनो सम्पत्ति थिक, जे हम चोरी क' कए ल' जायब। ओ जौं जाय चाहथु त' जाथु।

प्रजापति—[तीव्र स्वरें गरजैत] सती ! चलि आबह एम्हर !! [सती तैयहु कमल कें छोड़ैत नहि अछि। ई देखि कए तीव्रतर स्वरें] सती !

शंकर—चीत्कार कैने जौं सब काज भ' जाय, तखन कोनो समस्ये नहि होयत। सती अहाँ क पास नहि जैतीह।

प्रजापति—आओत आ अवश्य आओत। मुदा एखन जे ओ अबाध्य भ' रहल अछि, तकर कारण भेलह तों। तों ओकर सरलता क सुयोग ल' कए ओकरा सपना देखौने छहक। हम ई सबटा चालाकी बुझैत छी। हम जनैत छी जे तों ओकरा कोना छोड़बहक।

शंकर—[हँसैत] से कोना ?

प्रजापति—तों पाइ चाहैत छह ने—से तोरा भेंटतह। बाजह कत्तेक पाइ चाही। [शंकर एहि बात पर उच्च स्वरें हँसि दैत छथि] हँसैत कियैक छह ?

शंकर—अहाँ क कल्पना शक्ति क परिचय पाबि कए। [सती कें अपना पास सँ हँटा कए अगुआ जाइत छथि] मुदा जे देब उचित छल से अहाँ ने कहियो द' सकलहुँ ; ने कहियो द' सकब।

प्रजापति—की थीक ओ वस्तु ?

शंकर—स्नेह, प्रेम आ' प्रीति। जौं ई सब अपन बेटी कें द' सकितहुँ, त आइ ओ अहीं क दिसि जाइत।

प्रजापति—तों हमरा सँ मसखरा क' रहल छह?

शंकर—सत्य भाषण कखनहु-कखनहु मसखरे भ' जाइत छैक। अहाँ क कन्या ई सब वस्तु क अभावें भूखल छलीह। एहि दीर्घ जिनगी क राति सब मे ओ भूखले सुतलीह—मुदा अहाँ कें तकर पतो नहि छल। एखन सती पर अहाँ क कोनो अधिकार नहि अछि।

प्रजापति—सती पर तोहर कोन अधिकार छह जे हमरहि घर मे आबि हमरा उपदेश द' रहल छह?

शंकर—पत्नी पर पति क जे अधिकार रहैत अछि, सैह अछि।

प्रजापति—तकर म्-माने, हमरा सँ······नुका कए······।

शंकर—मुदा समाज सँ नुका कए नहि। हम सब ई बियाह कैने छी।

प्रजापति—[प्रचंड रूपें क्रुद्ध भ' कए] तों बुझैत छह जे ओहि अधिकार क बलें तों हमर समस्त सम्पत्ति क ग्रास करबह? से हम कथमपि नहि होमय देबह। हम······हम सती कें सम्पत्ति क एको कौड़ी नहि देबन्हि।

शंकर—[उपेक्षा क भंगिमा मे] हुँ! अहाँ कहियो बुझलहुँ जे अहाँ क सब सँ मूल्यवान सम्पत्ति की थीक? हम तकरा चीन्हलहुँ। तें हम सती कें अपन पत्नी क सम्मान देल अछि। रहल ओहि कुबेर क खजाना क बात, जकरा अहाँ सब दिन सँ सजबैत-सेंतैत ऐलहुँ—। ताहि लेल हम अहाँ पर मात्र कृपा क' सकैत छी। अहाँ प्रत्येक दिन अगुआ रहल छी मृत्यु क खाधिक दिसि—जहिया ओतय खसब, तहिया अहाँ क अवस्था कें देखि, अहाँ क अर्थ-स्वर्ण सब ऊपर सँ हँसत—जेना अहाँ क वृथा आस्फालन कें देखैत हमरा एखन हँसी आबि रहल अछि। [हँसि दैत छथि।] चलू सती! अहाँ क अपन घर चलू!

[सती उठि कए ठाढ़ होइत छथि कि मंच अन्हार भ' जाइछ। मंच सँ कमल आ' नाट्यकार प्रस्थित होइत छथि। आलोक पुनः संस्थापित

हैबाक बाद सती पहिलुके जकाँ बैसल देखना जाइत छथि। सती अपन कथन शुरू करैत आगाँ बढ़ैत छथि।]

सती—अपनहि घर मे बन्दिनी छलहुँ। ताहि सँ त मुक्ति भेटल। मुदा बहरा कए जतय ऐलहुँ, से और कठिन जगह छल। एतय सँ मुक्त हैब और कठिन छल। कारण, एतहुका देबार सब बनल छल प्रेम क कठिन पत्थर सँ। एहि जहल क रंगरूप दोसर छल—दासत्व सेहो दोसरे तरहक।

शंकर—[सती क वक्तव्य शेष हैबाक संगहि संग प्रविष्ट भए] सती ! सती !

सती—कहू ! [कमल क दिसि घुरैत छथि]

शंकर—[खुशी सँ उच्छ्वसित भ' कए] कहैत छी, कहैत छी। कनेक [बैसैत] आराम त करै दियह। [अपन टाइ क गिरह कनेक अलग करैत छथि। कमीज क दू-एकटा बटन खोलैत छथि आ' एकटा पैर पर दोसर पैर चढ़ा कए कहैत छथि] अहाँ कें एत्तेक दिन सँ कहैत छलहुँ ने जे पता लगैबे करब—लोग कोना ऊँच-ऊँच पद सब पर चलि जाइत अछि, सभक सामनहि सँ बहुत ऊपर उठि जाइत अछि ? से आइ हम बुझि गेलहुँ जे कोना ई सब होइत छैक। [हँसैत] आब हमरा के रोकि सकत ? [उत्तेजित भए कुर्सी सँ उठि कए पदचारणा करैत] आब शहर क दक्षिण दिसि सब सँ नामी मुहल्ला मे एकटा फ्लैट कीनब—एकटा कि दूटा गाड़ी रहत—बेयरा-बबर्ची-नौकर-चाकर......

सती—[बाधा दैत] आ' हम सब ?

शंकर—[उच्छ्वास प्रकट करैत] अरे हमरहि सभक लेल त ई सब किछु रहत।

सती—हमरा नहि चाही एहन सुख।

शंकर—से की ? [आश्चर्यान्वित भए सती क दिसि बढ़ैत छथि] ई की कहैत छी अहाँ ? अहाँ क लेल हम दिन-राति सोचि कए......आ' अहीं कहि रहल छी......

सती—हँ, हमहीं कहि रहल छी। [म्लानरूपें हँसैत] एखन हम एसगरे कहैत छी; नहि त पहिने अहूँ सैह कहैत छलहुँ।

शंकर—पहिने हम बहुत किछु करैत छलहुँ, कहैत छलहुँ—जे एखन ने करैत छी, ने कहैत छी।

सती—जेना, प्रेम नहि करैत छी। [कहि कए तिर्यक दृष्टियें शंकर दिसि देखैत छथि।]

शंकर—की कहैत छी सती! अहाँ सँ एखन हम प्रेम नहि करैत छी? [क्षुब्ध भ' कए] कहू, अहाँ कें कोन सुख नहि दैने छी?

सती—सुख? अहाँ क मुँह सँ प्रेम क नवे संज्ञा सुनि रहल छी। अहाँ सुख कें प्रेम कहैत छी?

शंकर—की बच्चा जकाँ करैत छी सती? कम ऑन, बी प्रैक्टिकल! हमरा लगैत अछि, अहाँ बहुत दिन सँ खिड़की आ' दरबज्जा क बाहर दुनिया दिसि नहि देखने छी।

सती—आ' हमरा लगैत अछि, अहाँ बहुत दिन सँ हमरा दिसि—अपन प्रेम क दिसि नहि देखने छी। कियैक त, दुनिया क दिसि देखैत-देखैत अहाँ क पास फुरसतिये नहि अछि।

शंकर—तखन अहाँ हमरा की करै कहैत छी?

सती—एहन सपना नहि देखू—जाहि सँ अहाँ अपनहु सँ बहुत ऊँच, बहुत ऊपर उठि जाय?

शंकर—सती! [पदचारणा करैत] हम देखैत छी जे अहाँ क मन मे किछु सौ साल पुरान चिन्ता आ' आदर्श एखनहु घुरि रहल अछि।

सती—हम सन्तोष चाहैत छी। हमरा जतबाक अछि, ताही सँ हम सुखी छी।

शंकर—किन्तु पुरुष सन्तुष्ट नहि भ' सकैत अछि—एतबा टा सँ; आ' हम एक पुरुष छी। हम सब समस्त दुनिया कें तोड़ि-फोड़ि कए हजारो बेरि आपन ढंग सँ सजबैत छी। ई चलैत रहैत अछि—जहिया धरि

ने हम अपन प्रार्थित वस्तु पबैत छी।

सती—आ' से अहाँ कहियो नहि पबैत छी।

शंकर—तैं हम बिना किछु कैने जेना छी, तहिना रहू—सैह ने? सती! तखन अहाँ क जे किछु अछि, सेहो नहि रहत।

सती—हम अहाँ सँ ने तर्क करै चाहैत छी, ने तर्क कैने जीतब। हम मात्र एतबहि कहब, जे एतय – एखुनका व्यवस्था मे हमरा ने कोनो अभाव अछि, ने दुःख। तखन कियैक परिवर्त्तन क लेल चेष्टा करब? आ' जौं प्रेम क अर्थ सुखे होइक – त अहाँ कें एतय सुख नहि अछि?

शंकर—[प्रचण्ड उत्तेजित स्वरें कहैत छथि] नहि—एतय सुख नहि अछि। [कहबा क बाद दुनू एक दोसरा क दिसि एक दृष्टियें देखैत रहि जाइत छथि।]

सती—[किछु काल चुप रहबा क बाद मन्द स्वरें] अहाँ कत्तेक बदलि गेल छी!

शंकर—[अनुत्तेजित कण्ठें] आ' हम हैरान छी जे अहाँ कियैक नहि बदलल छी!

सती—अहाँ एखन की करै चाहैत छी?

शंकर—हम जे किछु करै चाहैत छी, से अहाँ क बिना नहि हैत।

सती—हमर एत्तेक मोल?

शंकर—अहाँ कहियो अपना कें परखलहुँ जे मोल क पता लागत?

सती—[स्वगत] सत्ते त, अहाँ क प्रेम मे त हम बिनु मोल क बिका गेल छलहुँ!

शंकर—[सती कें बड़बड़बैत देखि] की कहलहुँ?

सती—किछु नहि। हँ, अहाँ नहि कहलहुँ—ऊपर चढ़बा क सीढ़ी क पता कोना लागल?

शंकर—[विचित्र जकाँ हँसैत] सीढ़ीये बनायब त अहाँ क हाथ मे अछि।

सती—माने?

शंकर—माने किछु नहि ; अहाँ कें बेसी किछु करै नहि पड़त, तखन······

[किछु सोचैत चुप भ' जाइत छथि ।]

सती—[कमल कें द्विधाग्रस्त देखि] की भेल ?

शंकर—इयैह माने हमर बड़का अफसर सब कें एन्टरटेन करै पड़त। माने, हुनका सब कें एतय बजाबै पड़त, नीक खाना-पीना क इन्तजाम करै पड़त। भ' सकैत अछि, हुनका सब सँ अहाँ कें कखनहु-कखनहु गप-सप करै पड़त आ' प्रयोजन भेल त किछुकाल क लेल घूमै पड़त। इयैह सब, और की ? माने······ [सती क दिसि देखैत थम्हि जाइत छथि।]

सती—[एतबा देर धरि आहत दृष्टियें कमलक दिसि देखैत चुपचाप सब बात सुनि रहल छलीह।] माने हम सबटा बुझि गेल छी ।

शंकर—[दाँत निपोड़ने] तखन त नीके ! बुझबे करैत छी, ई सब बिना कैने आइकालिह प्रोमोशान—इन्क्रिमेन्ट किछु भेटब मोसकिल होइत अछि।

सती—अहाँ की बुझैत छी जे अहाँ क जनरल मैनेजर कें खुऔने-पिऔने सँ आ' दूटा बात कैनहि सँ अहाँ कें ई सब भेटि जायत ?

शंकर—[उद्विग्न भए] नहि, माने......भ' सकैछ कोनो होटल मे, हुनका संग......माने, एक-दू राति अहाँ......

सती—[चौंकैत] की ? की कहलहुँ ?

शंकर—म्-माने, अहाँ कें होटल नहि पसिन्न होमय त घरे मे......इयैह एतहि—

सती—[क्रोध सँ असंवृत भए चीत्कार करैत] अहाँ हमरा वेश्या बना रहल छी—अहाँ अपन प्रेम कें बेचि रहल छी मात्र सुखक लेल ? [कुर्सी पर बैसि कए कानै लगैत छथि।]

शंकर—[सती कें कनैत देखि आगाँ बढ़ि कए] सती ! हमर बात त सुनू ! हमर प्रेम ताहि सँ कतय कम भ' रहल अछि ? हमर जनरल मैनेजर क संग दू राति बितौने अहाँ क की हैत ? किछु नहि। अहाँ हमरा लेल जेहन छलहुँ, तेहने रहि जायब। [आगाँ आबि कए सान्त्वना देबाक

भंगिमा मे सती कें छूबैत कहैत छथि] सती ?

सती—[शंकर सती कें पुचकारैत देह पर हाथ फेरैत छथि । संगहि संग विषस्पृष्ट जकाँ सती हाथ कें हँटबैत कहैत छथि] हँटि जाउ ! नहि छूबू हमरा ! [उठि कए कहैत छथि] अहाँ हमरा समस्त प्रेम-प्रीतिक गला घोंटि देने छी—अहाँक हाथ मे तकर चेन्ह अछि । क्षमता क लालसा मे अहाँक सब बात सँ दुर्गन्ध बहरा रहल अछि । अहाँ दूर भ' जाउ हमर सामने सँ [कहि कए शंकर क दिसि सँ मुँह घुरा लैत छथि ।]

शंकर—[आहत भए क्रुद्ध सर्प जकाँ माथ उठबैत छथि] ओ—त आब हम बुझि गेलहुँ, कत्तेक सस्त आ'फोंक छल अहाँक प्रेम आ' प्रीति । हम आइ धरि कहियो अहाँ सँ किछु नहि माँगने छलहुँ । अहाँ क लेल ई सब किछु हम अपन शक्ति-बुद्धि-अर्थ आ' श्रम सँ केलहुँ । आ' अहाँ एहन सती छी जे हमर उन्नति क लेल एकटा पुरुष कें एन्टरटेन धरि नहि क' सकैत छी ? हम अहाँक पति भ' कए जखन कहैत छी जे ताहि सँ तकर बादो हमरा सभक सम्बन्ध बदलत नहि, तखन अहाँक कियैक आपत्ति अछि ?

सती—से अहाँ नहि बूझब । जौं अहाँ बुझितहुँ, त एहन चिन्ते नहि करितहुँ । छी-छी ! हम सोचियो नहि सकैत छी— [माथ झुकबैत दूनू हाथें मुँह झाँपि लैत छथि ।]

शंकर—[उपेक्षाक भंगिमा मे हँसैत] हुँह, एक समय कत्तेक प्रतिज्ञा भेल छल—'हम अहाँ कें देलहुँ अपन समस्त देह, अपन मन, अपन सब किछु' । [सती क दिसि तिर्यक दृष्टियें देखैत] ताहि शरीर पर हमर एतबहुटा अधिकार नहि जे--। से सबटा फूसि छल, आब बुझल । मुदा सती, ई जानि राखू हम अहाँक कोनो काजक लेल अपन शरीरो कें तुच्छ क' सकैत छी । [कहि कए शंकर मंच सँ निष्क्रान्त होइत छथि ।]

सती—[शंकर क चलि गेलाक बाद मुँह पर सँ हाथ उठा कए विह्वल जकाँ दर्शक क दिसि देखिते रहि जाइत छथि । स्वगत कहै लगैत छथि]

जकरा हम अपन तन-मन सब किछु द' देने छी, तकरहु लेल कि हम ई नहि क' सकैत छी ? [प्रश्न समाप्त हैबाक संगहि संग सतीक मुँह चिन्तान्वित भ' उठैत छन्हि, ठोर काँपै लगैत छन्हि आ' समस्त शरीर मे प्रतिवाद क एकटा विहाड़ि आबि जाइत अछि। सती भिन्न स्वरें कहि उठैत छथि।] नहि नहि, ई ......ई कथमपि नहि हैत हमरा सँ; ई हमरा सँ नहि हैत।

पवित्र—[सतीक वाक्यक अन्तिमांश समाप्त हैबा सँ पहिनहि मंच पर प्रविष्ट होइत] की नहि हैत ?

सती—[पाछाँ घुरि कए पवित्र कें देखैत] किछु नहि। [दीर्घ उच्छ्वास कें नुकैबाक चेष्टा करैत छथि।]

पवित्र—[कनेक हँसैत] की बात थीक ? कमल बाबू नीचाँ जाइत हमरा भेटलाह। हम टोकबो कैलियन्हि, मुदा कोनो उत्तर नहि देलन्हि।

सती—[जेना एतबा देर सँ पवित्रक कोनो बात सुनि नहि रहल होथि, ताहि मुद्रा मे] पवित्र बाबू, अहाँ हमर एकटा प्रश्नक सदुत्तर द' सकैत छी ?

पवित्र—कहि कए त देखू !

सती—अहाँ त लेखक छी।

पवित्र—नहि-नहि, एतय त हम पवित्रे छी। लेखक जतय हैब, हैब।

सती—हम हँसी नहि क' रहल छी।

पवित्र—[हँसैत] चलू ! तखन हमहूँ सीरियस भेलहुँ।

सती—अहाँ अपन उपन्यासक नायिका लोकनि कें चिन्हैत छियन्हि ? एतबा दिन मे चिन्हि पौलियन्हि ?

पवित्र—बड़ कठिन प्रश्न कैलहुँ। [सोचैत] किछु किछु त' अवश्य चिन्हैत छियन्हि। मुदा, ई प्रश्न······

सती—कियैक नहि जानि हमर ई धारणा अछि—अहाँ सब नारी कें नहि चीन्हि सकलहुँ, ने चीन्हि सकब। कारण, कखनहु ताहि लेल चेष्टो नहि

कैल अछि।

पवित्र—से कियैक कहैत छी ? [सती क बात सँ कनेक आहत होइत छथि।]

सती—अहाँ क एकटा उपन्यासक नायिका—की ने नाम छल, मन नहि पड़ि रहल अछि; ध' लियह पार्वतिये—हुनक बाबूजी धनिक छलाह, माय नहि छलीह—मन पड़ल ? [पवित्र कें निरुत्तर देखि] पार्वती क पिता क हृदय छलैक हुनक खजाने सन विशाल। तैं ओ कोनहु दिन माय क अभाव कें बुझि नहि सकल—

पवित्र—हँ, हँ; मन पड़ल।

सती—तकर बाद, नीक दिन देखि हुनक पिता एक उच्चवंश क घर सँ पार्वती क वियाह क' देलन्हि—खूब धूमधाम क संग। तकर बाद जे भेल छल, से सब दिन क कथा थीक। पहिल राति, जकरा ल' कए एकटा नारी स्वप्न क माला सजौने छल, पार्वती क पति पशु जकाँ पार्वती क देह ल' कए एकटा दानवीय खेल मे पागल भ' उठल छल। तकर बाद क कथा त अहाँ कें मन हैत।

पवित्र—[माथ झुका कए] हँ। तकर बाद रोज राति चलल इयैह अत्याचार। ओहि पुरुषक कहियो इच्छा धरि नहि भेलैक—आँखि खोलि कए देखत जे कोना हुनक पूजा क फूल हुनक सहधर्मिनी सजा रहल छलीह। पार्वती पढ़ल लिखल नीक रुचिवला घर क नीक कन्या छलीह। ओहि दानव क हाथ सँ मुक्ति पैबाक लेल ओ चेष्टा कैने छलीह—आ' पैनहु छलीह।

सती—मुदा ताहि लेल पार्वती कें आत्महत्या कर' पड़लन्हि। कियैक पवित्र बाबू ! की पार्वती क लेल आन कोनो पथ नहि छलैक मुक्ति पैबाक ?

पवित्र—जाय दियह—ओ त मात्र कहानी छल। [सती क उत्तेजना क प्रशमन करैत]

सती—नहि, हमर बात अहाँ कें सुनै पड़त। [पदचारणा करैत] पार्वती क ससुरारिये मे आरो एक गोट पात्र छलाह—पशुपति क भाइ, रमापति,

जनिका सँ पार्वती क एकटा मधुर सम्बन्ध क जन्म भेल छल। कारण, रमापति क स्वभाव छल पशुपति क बिपरीत। कारण, ओ कवि छलाह, शिक्षित छलाह—अपन बड़ भाइ सन अशिक्षित लोहा क कारबारी नहि छलाह—

पवित्र—हँ, रमापति तँ हमरहु नीक लगैत छल।

सती—मुदा हमरा हुनका पर घृणे होइत अछि।

पवित्र—से कियैक?

सती—रमापति पार्वती कें चाहैत छलाह। अपन काव्य मे, अपन कल्पना मे प्रेम क शब्द सब कें ओ हजारो बेर कहने छलाह—मुदा हुनका साहस नहि छलन्हि जे पार्वती क सामने जा कए कहितथि।

पवित्र—और पार्वती?

सती—पार्वती कें त अहाँ चिन्हैं नहि देलहुँ पवित्र बावू! तकर पहिनहि अहाँ हुनक हत्या कैलहुँ। मुदा कियैक से कैलहुँ? की पार्वती समाज कें अस्वीकार कए पशुपति कें छोड़ि रमापति कें स्वीकार नहि क' सकैत छलीह? पार्वती कें अहाँ एहि मुक्ति क स्वाद कियैक नहि देलहुँ पवित्र-बाबू—कहु! जवाब दियह! [कहैत कहैत सती पवित्र क पास चलि अबैत छथि। पवित्र सती क दिसि एकबेर विचित्र दृष्टियें देखैत छथि आ' तकर बाद माथ झूका लैत छथि एकटा दीर्घश्वास क संग] बुझलहुँ। अहाँ क पास तकर उत्तर नहि अछि। [सती पुनः मंचक दोसर दिसि चलि जाइत छथि] भरिसक अहाँ उत्तर खोजि रहल छी—अकास आ' पतालक सबटा पुराण क पन्ना उनटा कए।

पवित्र—से नहि भ' सकैत छल। तकर कारण भरिसक......ओहि कथाक परिवेश आन तरहक छल। माने, तखुनका समाज......तकर नियम...

सती—[व्यंग्यात्मक स्वरें] अच्छा, ध' लियह—ओहि कथाक काल ठीक वर्त्तमान, ई मुहूर्त्त। आ' [सोचैत] पशुपति क चरित्र मे पशुता नहि छल, मुदा ओ छलाह एहन एक गोट व्यापारी, जे अपन सुन्दर

पत्नियो कें लाभक लेल उपयोग मे आनै चाहैत चलाह—बस, एतबहिटा पशुता छल हुनका मे। अहाँ क सुविधाक लेल आरो एकटा परिवर्त्तन क' दैत छी। ध' लियह' रमापति पशुपति क अपन भाइ नहि छलाह, तखन दुनू मे एहन सख्यता छल जे अपना मे सम्बन्ध भाइये सन छलन्हि। तखन ? तखन अहाँ की करितहुँ ?

पवित्र – भरिसक पशुपति सँ छीनि कए पार्वती कें रमापति सँ मिला दितहुँ।

सती—[पवित्र क बहुत पास चलि आबैत छथि] पवित्र बाबू! अहाँ पार्वती कें एखनहु चिन्हलहुँ नहि। [पवित्र किछु नहि कहि सती क दिसि देखैत चुप रहि जाइत छथि।] हम……हम छी पार्वती। अहाँ हमरा मुक्ति द' सकैत छी ? हम एहि घृण्य जीवन सँ मुक्ति चाहैत छी—मुक्ति।

पवित्र—[सती कें एत्तेक पास ठाढ़ देखि आवेग सँ थरथरबैत छथि। मुदा समाज क डरें पछूआ जाइत छथि।] नहि-नहि……ई कोना भ' सकैत अछि ? कमल……कमल हमर मित्र थीक।

सती—[पवित्र दिसि तीव्र दृष्टियें देखैत पाछाँ हँटैत तीक्ष्ण स्वरें कहैत छथि] ओ ! मने-मन मित्र क पत्नी क कामना क' सकैत छी—मुदा तकरा कहबा मे पाप होइत अछि ? डर होइत अछि लोग क, समाज क !!! [व्यंग्यात्मक स्वरें] वाह ! अहाँ जे एत्तेक साहसी छी, तकर पता नहि छल। अहाँ सभक सब किछु पशुता सँ भरल रहैत अछि। एखन देखैत छी दोष पार्वती क नहि छल, ने रमापति क छल—दोषी छी अहाँ, हँ अहीं छी। पवित्र बाबू ! लिखब छोड़ि दियह ! जकर अपन जीवन मे ने अछि सिद्धान्त, ने साहस—से अनकर विषय मे की लिखत ?

पवित्र—[बाधा देबाक चेष्टा करैत] मुदा…हम…हमरा किछु……

सती—[उत्तेजित स्वरें] हम किछु नहि सुनै चाहैत छी। निकलि जाउ ! निकलि जाउ अहाँ हमर घर सँ !! [पवित्र कें विस्मित जकाँ ठाढ़ रहैत

देखि चीत्कार करैत कहैत छथि] जाउ !!! [कहबा क संगहि संग पवित्र प्रस्थानोद्यत होइत छथि। सती कानै लगैत छथि—दुनू हाथें मुँह झँपने। पवित्र क्रन्दन क शब्द सुनि घुरि कए देखैत छथि। मुदा, साहस नहि होइत छन्हि जे आबि कए सान्त्वना देथि। मंच पर अन्धकार भ' जाइत अछि।]

[मंचक एक कोना मे ठाढ़ नाट्यकार पर अल्परेख पड़ैत अछि। नाट्यकार क वक्तव्य शुरू हैबाक संगहि संग सती क कानबाक शब्द बन्द भ' जाइत अछि। मंच क पश्चदेश मे नीलाभ आलोक पसरैत अछि। मंच पर सती, कमल, आ' एक अपरिचित पात्र कें ठाढ़ देखल जाइछ। कमल वाम दिसि पार्श्व-पट्टिका क पास आन दिसि मुँह फेर कए ठाढ़ रहैछ। ओ अपरिचित पात्र दर्शक दिसि पाछाँ घुरल सती क पास ठाढ़ रहैत छथि आ' हुनक दहिना हाथ सती क वाम कान्ह दिसि बढ़ल देखना जाइत छन्हि। सती क सिनूर लेपटायल छल; पहिरलका साड़ी बिस्रस्त छल आ' ओ दर्शक दिसि बढ़ल ठाढ़ छलीह। मंच क दहिना कोना पर पवित्र क भूमिका मे ठाढ़ अनिरुद्ध सब किछु देखैत छलाह।]

नाट्यकार—तकर बाद और की हैत ? शैतान क छाया पड़ल एकटा सुन्दर परिवार पर। शैतान क नाम छल वासना—अतृप्त वासना—लोभ देह क, लोभ अर्थ क आ' लोभ क्षमता क। सती क बलि चढ़ाओल गेल लोभ क लाल आगि मे। आ' तकर मूल्य भेंटि गेलन्हि शंकर कें। शंकर कें आशीर्वाद भेंटल हुनक जनरल मैनेजर क। [एतबा कहबा क संगहि संग ओ अपरिचित पात्र, अर्थात् शंकर क जनरल मैनेजर अगुआ जाइत छथि शंकरक दिसि। ओम्हर शंकर संगहि संग पार्श्व पट्टिका क दिसि सँ पाछाँ घुरि कए नतजानु भ' कए बैसैत छथि। आ' जनरल मैनेजर शंकर क माथ पर आशीर्वाद क भंगिमा मे हाथ राखैत छथि। नाट्यकार क कथन क संगहि संग ई सब होइत छल।] आ' तैं भेंटल नीक

पद, नीक दरमाहा, नीक फ्लैट आ' नीक विदेशी गाड़ी—बस, और की चाही जिनगी मे ? [एतबा कहबाक संगहि संग नाट्यकार पर सँ अलपरेख हटि जाइत अछि। नाट्यकार, पवित्र आ' जनरल मैनेजर प्रस्तरीभूत रहि जाइत छथि। मात्र शंकर और सती अभिनय करैत छथि।]

शंकर—[उत्तेजित भए नतजानु अवस्था सँ उठि कए सती क दिसि बढ़ैत छथि।] सती ! सती ! सुनैत छी ? [सती मृत जकाँ शंकर दिसि देखैत छथि, मुदा शंकर ताहि दिसि बिना देखनहि कहै लगैत छथि] जनैत छी, हमरा आइ केहन प्रोमोशन भेटल अछि ? [आनन्द सँ विह्वल भ' जाइत छथि] हमरो ओ सब मैनेजेरियल रैंक मे ल' लेलन्हि—नव फ्लैट भेटत, गाड़ी-ड्राइवर-बबर्ची-अर्दली—सब किछु। ओह—ई सब, सब किछु अहीं लेल भेल सती। एहि तीन महीना मे अहाँ हमरा लेल जे किछु कैलहुँ, तकर जबाब नहि। [थम्हैत सती कें छूबैत] कहू ! अहाँ की चाहैत छी ? आइ अहाँ जे चाही हमरा सँ माँगि सकैत छी। जौं अकासक तारा चाही, त सेहो हम.........

सती—हम जे चाहैत छी से द' सकब ?

शंकर—अहाँ कहि कए त देखि लियह।

सती—हम अहाँ सँ मुक्ति चाहैत छी, शंकर।

शंकर—[चौंकैत पछुआ' जाइत छथि] ई की ? नहि-नहि, ई कोना हैत ?

सती—इयैह कहैत छलहुँ, अकास क तारा सेहो देब, तखन एतबो नहि द' सकैत छी ?

शंकर—मुदा ई कोना भ' सकैत अछि सती ? हम—हम अहाँ सँ प्रेम करैत छी।

सती—[पागल जकाँ हँसै लगैत छथि। हँसैत-हँसैत आँखि मे नोर आबि जाइत छन्हि] प्रेम ? प्रेम की थीक शंकर ? ओ त पुरुष क बनाओल एकटा शब्द थीक। ओ त नारी कें वशीभूत करबाक एकटा मन्त्र थीक।

ओ त एकटा जाल थीक, जाहि मे एकबेर शिकार फँसै, त निकलि नहि पबैत अछि। [कनैत] हम ओहि जाल मे फँसल छी, शंकर! अहाँ हमरा छोड़ि दियह।

शंकर—मुदा, सती......[कहबाक संगहि संग शंकरो आन सब चरित्रे जकाँ प्रस्तरीभूत भ' जाइत छथि।]

सती—[मंच क सम्मुखभाग मे आबि जाइत छथि। सती क मुख पर अल्परेख पड़ैत अछि। एहि बीच जनरल मैनेजर निष्क्रान्त होइत छथि।] तखन हमरा लेल मुदा, किन्तु, वा, अथवा क कोनो मर्यादा नहि छल। हम बुझि गेल छलहुँ जे शंकर एतहि नहि रहताह। ओ आरो ऊपर उठबाक चेष्टा करताह, हमरा ततबहि छोट होमै पड़त अपन आत्मा क पास। भनहि क्यो नारी कें नहि चिन्हने होथि, हम तखन धरि पुरुष कें चीन्हि गेल छलहुँ। [कनेक काल चुप रहैत] और तकर बाद सँ आइ धरि हजारो पुरुष क बिछाओल जाल कें हम छिन्न-विच्छिन्न क' देने छी। मुदा एखन...... [किछु सोचैत चुप भ' जाइत छथि। एतबा कहबाक संगहि संग नाट्यकार, कमल आ' अनिरुद्ध प्रस्तरीभूत अवस्था सँ स्वाभाविक अवस्था मे आबि जाइत छथि।]

नाट्यकार—की एखन ?

सती—एखन, माने आइ-काल्हि कखनहु-कखनहु ई सब करैत-करैत सन्देह होइत अछि—हम जे जनलहुँ, जे सिखलहुँ—से ठीक अछि त! हम... हम भूल त नहि क' रहल छी ? ई सोचितहि हम पागल सन भ' जाइत छी। हम अपन चारू कात क स्त्रिगण कें बारम्बार पूछैत रहैत छी—'अहाँ सुखी नहि छी ने ? अहाँ सुखी नहि छी ने ?'

नाट्यकार—ओ सब की कहै छथि ?

सती—[किछु काल चुप रहि कए] सैह त' आश्चर्य क गप्प थीक, नाट्यकार। बहुतो गोटे कहैत छथि—'हँ; हम सुखी छी।'ओ सब फेरो पूछैत छथि—'कियैक, अहाँ सुखी नहि छी की ? कियैक नहि छी ?' [अपनहि मने

कहैत छथि] कियैक नहि छी– सत्ते त। [नाट्यकार सँ] भ' सकैछ, हमर हिसाब मे भूल भेल अछि। भ' सकैछ, ठीक अछि। अहाँ हमरा एहि प्रश्न क उत्तर बता देब, नाट्यकार ?

नाट्यकार--हमरा पास उत्तर कतय अछि सती ? हम त' अपनहि हिसाब मे कमजोर छलहुँ। हिसाब क खाता मे कथा लिखैत छलहुँ। [हँसैत] एत्तेक दिन बीति गेल, मुदा आदति नहि छूटल अछि। अहूँक कथा हम ओहि खाता मे लिखि लेलहुँ। आब अनिरुद्ध क कथा सुनब। अनिरुद्ध !

दोसर नाटक

अनिरुद्ध—कहू !

नाट्यकार—आब अहाँक कथा सुनब।

अनिरुद्ध—हमर कथाक त शेष नहि भेल अछि। तखन कोना सुनाउ ?

नाट्यकार—हम त अहाँ कें कहनहि छी--हम सब दोसराक अशेष दुःख आ' असमाप्त कथा सुनब बड़ पसिन्न करैत छी; कारण—

अनिरुद्ध—कारण हमरा पता अछि। कारण, हम सब—सब क्यो भूखल छी एकटा कथाक लेल; पियासल छी एकटा सपना क लेल। [आवेश मे आबि जाइत छथि] कारण, हम सब दोसर क भूख आ' पियास ल' कए कविता लिखब बड़ पसिन करैत छी।

नाट्यकार—उत्तेजित जुनि होउ, अनिरुद्ध। जनैत नहि छी, दिल्ली क अधिपति उत्तेजना कें सेहो गैर-कानूनी घोषित क' देने छथि।

अनिरुद्ध--[म्लान, हँसैत] जनैत छी नाट्यकार। जकर पेट भरल रहैत अछि, से उत्तेजना पसिन कियैक करत ? चीत्कार कियैक करत ओ, जकर कंठ सुखा गेल अछि मधुर सँ ! [पदचारणा क' कए] हमर जीवन क, हमर कथा क पात्र सब--सेहो कखनहु उत्तेजना पसिन नहि

करैत छल।

नाट्यकार—के छलथि ओ सब ? [मंच पर मेक-अप मैन प्रविष्ट होइत छथि और सती क मुख पर बयसक चेन्ह पाड़ैत छथि; माथक केस कें उज्जर करैत छथि।]

अनिरुद्ध—हमर कथाक मुख्य पात्र जे रहथि, से हमर कथाक आरम्भ हैबा सँ पहिनहि एहि लोक सँ चलि गेल छलाह--आन कतहु भरिसक शांतिक खोज मे। [कनेक थम्हि कए] जखन ओ नहि रहलाह, तखन अप्रधान पात्र सभक बाजब-भूकब हँसब-कानब बढ़ि गेल छल। आ' हमर भूखो बढ़ि गेल छल--प्रचण्ड क्षुधार्त्त भ' गेल छलहुँ हम सब।

नाट्यकार—के छलाह ओ—अहाँक कथाक प्रधान चरित्र ?

अनिरुद्ध—हमर पिताजी। हुनक निधन क बाद पता चलल जे हुनक जीवने छल हमरा सभक साधन। नहि त हमरा सभक कोनो सम्पत्ति नहि छल। बहुत किछु, जे हम जनैत छलहुँ जे हमरा सभक छल, तखनहि पता चलल जे ओ सब किछु अनकर सम्पत्ति छलैक। हुनक मृत्यु हमरा लेल छोड़ि गेल छल नाटक क किछु चरित्र, अप्रयोजनीय वार्त्ता आ' ढेर रास दायित्व।

नाट्यकार—नाटकक किछु चरित्र माने ?

अनिरुद्ध—एक छल हमर माय—दुर्भाग्यक शिकार; हमर बहिन—रमा जे बाबूजी क निधन क बाद जिनगीक दोसर अर्थ क सन्धान मे लागि गेल छल; और छल—शान्ता, जकरा सँ हम कहियो प्रेम करैत छलहुँ। मुदा, जखन हमरा पता चलल जे कालिह सँ हमरा भुखले सुतै पड़त—जखन आशा क देबार सब ढहि गेल—तखन हमरा लेल हमर माय, बहिन आ' शान्ता—सब क्यो बदलि गेल छल; तीनो मे कोनो पार्थक्य नहि रहल! नाट्यकार, क्यो नहि देखलक, ने क्यो बुझै चाहलक जे हमहूँ भुखले छी सभ क संग। ओ सब-सब क्यो हमरा सँ अपन अपन हिसाब लेबाक लेल, अपन प्राप्य लेबाक लेल एक भ' गेल छल—सब

बदलि कए एक रंग, एक रूप भ' गेल छल।

नाट्यकार—तखन सतिये अहाँ क कथा मे—

अनिरुद्ध—[नाट्यकार कें वाक्य समाप्त नहि करै दैत] हँ, ध' लियह, ओ सब एहने रहथि। [सती कें देखा कए] तकर बाद रहथि युधिष्ठिर बाबू—जनिका हम अपन पिता जी क बिजिनस क पार्टनर जानैत छलहुँ; और रहथि सुयोधन ठाकुर—जनिका हम कखनहु-कखनहु पिताजी क पास आबैत देखैत छलहुँ—दुनू अलगे गप करैत छलाह। जहिया धरि हम अभाव क स्वरूप नहि देखने छलहुँ, तहिया धरि सोचैत छलहुँ युधिष्ठिर बाबू आ' सुयोधन ठाकुर और हमर चारूकात क लोग सब हमर परिवार क, हमर पिताजी क मित्र छथि। [कनेक देर चुप रहि जाइत छथि।] तकर बाद एक दिन हमर मोह भंग भ' गेल।

नाट्यकार—कहिया ? कखन ?

अनिरुद्ध—जहिया हमरा ओतय हिनका सभ क स्वरूप खुजि गेल छल, मुखौटा उतरि गेल छल। [पदचारणा करैत छथि।] तखन पिताजी क मृत्यु क एक मास भ' गेल छल—कि ताहि सँ किछु दिन बेसिये। माय आ' हम बैसल छलहुँ। हम कतहु जबाक लेल तैयार भ' रहल छलहुँ—भरिसक। [मंच सँ कमल आ' नाट्यकार अनिरुद्ध क एहि प्रसंग क उत्थापन क संगहि संग निष्क्रान्त भ' जाइत छथि। मंच पर अन्हार पसरि जाइत अछि। सती पर अलपरेख पड़ैत अछि। अनिरुद्ध अपन कमीज आ' पैंट क जेबी पर हाथ धरैत सोचि रहल छलाह जे सब प्रयोजनीय वस्तु लेने छथि वा नहि। हुनकहु मुँह पर अलपरेख पड़ैत छन्हि। सती अनिरुद्धक सभ काज पर ध्यान द' रहल छथि।] हँ; रूमाल लेलहुँ, ककही लेनहि छी—ई भेल कागज-पत्तर, पाइयो किछु अछिये—और......और की ने बिसरि रहल छी, की...... [सोचबाक चेष्टा करैत] —की बिसरि रहल छी, माय—कह त [माय क भूमिका मे ठाढ़ सती क दिसि देखैत पूछैत छथि]

माय—[किछु काल अपन सन्तान दिसि क्लान्त दृष्टियें देखैत] भरिसक अपन पिता कें [कहबा क संगहि संग समस्त मंच आलोकित भ' उठैत अछि। घर मे दीनता क चेन्ह साफ बुझना जाइछ]।

अनिरुद्ध—[आश्चर्य] की कहैत छें माय ? हुनका कियैक बिसरब ?

माय—तखन भरिसक बिसरि गेल छें अपना सभक अवस्था कें।

अनिरुद्ध—[माय क पास आबि कए हुनक हाथ कें अपन हाथ मे लैत] तोरा की भ' गेल छौक, कह त ?

माय—[हाथ छोड़ा कए ठाढ़ होइत] किछु नहि आ' जौं किछु भेलो अछि, त तोरा कोन प्रयोजन पड़ल छौक जे तकर खोज लेबें ! [स्वर मे क्षोभ क परिचय पाओल जाइत अछि]।

अनिरुद्ध—[हँसैत] नहि; देखैत छी जे तों हमरा पर गोसायल छें माय। [कहैत माय क हाथ पुनः अपन हाथ मे लेबाक बाद हठात् हाथ दिसि देखैत] ई की ? तोहर सोना क चूड़ी सब कतय छौक ? कियैक खोलि कए बक्सा मे ध' देलें ? ई हमरा एकदम पसिन नहि—जे हमर माय रहै एहन भिखमंगिनी सन। कतय छौक—निकाल ओ सब आ' एखनहि पीन्हि ले। [माय कें तैयहु निरुत्तर देखि] की भेलौक ? किछु कहैत कियैक नहि छें ?

माय—हमरा नीक नहि लगैत अछि ओ सब पीन्हब।

अनिरुद्ध—मुदा हमरा लगैत अछि—आ' बाबुओ जी कें लगैत छलन्हि। तोरा मन नहि छौक ? एक बेरि कोनो कारणें तोहर हाथ शून्य छलौक त कोना बिगड़ल रहथि ! जौं। एखनहि पहिरि कए देखा दे त हम जैबौ। नहि त इयेह हम बैसलहुँ। [सत्तो बैसि जाइत छथि—ओतय पड़ल एकटा कुर्सी पर।]

माय—म्-मुदा......[कहैत-कहैत चुप भ' जाइत छथि।]

अनिरुद्ध—मुदा की ?......

माय—[माथ झुका कए] ओ सब किछु नहि अछि, त हम तोरा कोना

दुखाउ !

अनिरुद्ध—[चौंकैत] की ? नहि अछि माने ? ककरा देलें ? कतय गेल ओ सब ?

माय—[पेट दिसि देखबैत] हमर, रमाक आ' तोहर पेट मे।

अनिरुद्ध—माने ? [माय कें चुप रहैत देखि उत्तेजित भ' कए] माय ! की भेल अछि से कियैक नहि कहैत छें ?

माय—की नहि भेल अछि हिनका गेला क बाद ! [मंच क एक कात मे आबि जाइत छथि—पदचारणा करैत-करैत। संगहि संग अनिरुद्ध माय क पास अगुआ अबैत छथि] तोहर बाबू जखन रहथि, तखनहि हमर गला क हार चलि गेल छल—आरो दू-एकटा जेवर तखनहि स्वाहा भ' गेल छल।

अनिरुद्ध—[आहत भए] मुदा हमरा कियैक नहि एहि सभक पता होमय देलें ?

माय—तोरा कहिये कए की होइत ? आ' ताहि पर तखन तोहर एम० ए० क फाइनल परीक्षा छलौक।

अनिरुद्ध—मुदा बाबूजी ? हुनका तखन की भेल छलन्हि। ओ त आफिस जाइत छलथि। तखन ई कोना भेल ?

माय—[मलिन हँसी हँसि कए कहैत छथि] आफिस ! हँ, जाइत त रहथि, मुदा जा कए भरिसक कोनो पार्क मे बैसल रहैत छलथि। आ' से पहिनुके जकाँ नियम सँ करैत रहथि, जाहि सँ ककरो पता नहि चलै।

अनिरुद्ध—कियैक ?

माय—नहि जानि हुनका संग युधिष्ठिर बाबू क की भेल छलन्हि ! भरिसक हुनका दुनू मे झगड़ा भेल छलन्हि। आ' ओ हिनका कम्पनी सँ कोनो तरहे छाँटि देने छलाह। हमरा से सब किछु बूझल नहि छल। हमरा एहि सभक किछु-किछु पता तखनहि चलल जहिया मास क शेष भ' गेल, नव महीना शुरू भ' गेल, मुदा घर क खर्चा क

लेल हमरा टाका नहि भेंटल। [चुप रहि कए पुनः कहै लगैत छथि] आ' ओही दुनू मास मे सभ किछु चलि गेल।

अनिरुद्ध—[चीत्कार करैत] रह माय, रह......तकर माने, तकर माने हुनक ओ एकसिडेन्टो ऐकसिडेन्ट नहि छल। तकर माने बाबूजी जानि बुझि कए......ओफ! [दुनू हाथें अपन मुँह झाँपि लैत छथि।]

माय—[स्वर मे क्रन्दन क आभास अबैछ।] जखन हम सुनलहुँ जे तोहर बाबूजी रेल क पटरी पार करैत काल......

अनिरुद्ध—[मुँह झँपनहि] बस माय—बस—रहै दे। हमरा आब सुनबा क काज नहि अछि। [हाथ कें मुख पर सँ उतारि कए] मुदा, हम छोड़ब नहि ककरहु— हम......हम [जैबा लेल उद्यत होइत छथि।]

माय—अनिरुद्ध! [माय क पुकार सुनि थम्हि जाइत छथि।] कतय जा रहल छें?

अनिरुद्ध—हम जा रहल छी बाबूजी क आफिस मे।

माय—कियैक?

अनिरुद्ध—हमरा युधिष्ठिर बाबू सँ हिसाब करबा क अछि। वैह बाबूजी कें एहि पथ पर धकेलि देने छथि—वैह हुनका आत्म-हत्या क लेल बाध्य कैने छथि, हम हुनका नहि छोड़बन्हि, हम...... [कहैत-कहैत अनिरुद्ध उत्तेजित भ' उठैत छथि, दाँत पीसैत थम्हि जाइत छथि।]

माय—नहि, तों ओतय नहि जा सकैत छें। तों किछु क' लेबें त' हमर जेहो सहारा अछि, सेहो नहि रहत। [कहैत-कहैत कानै लगैत छथि। अनिरुद्ध घुरि अबैत छथि एवं माय कें सान्त्वना देबाक चेष्टा करैत छथि। तावत् युधिष्ठिर क भूमिका मे नाट्यकार प्रविष्ट होइत छथि। माय वा अनिरुद्ध-क्यो हुनका अबैत नहि देखलकन्हि।]

युधिष्ठिर—वाह! नाटक नीक जमल अछि।

अनिरुद्ध—[कहैक संगे संग घुरि कए युधिष्ठिर कें देखैत छथि एवं तीव्र व्यंग्यात्मक स्वरें कहै लगैत छथि।] ओ! त अहाँ कें ई सब नाटक

बुझा रहल अछि !

युधिष्ठिर—अत्यन्त उच्च कोटिक !

अनिरुद्ध—त जखन अपने नाटक देखनहि छी, तखन त हमरा सब कें तकर मोल ओसुलनाइये उचित ।

युधिष्ठिर—[हँसैत] तें ने नाटक कहैत छी । जहिना बरामदा सँ माय-बेटा क नजरि नीचाँ रास्ता पर पड़लन्हि आ' देखलथि जे युधिष्ठिर बाबू आबि रहल छथि कि दुर्योधन आ' गान्धारी कानै लगलाह ।

अनिरुद्ध—अहाँ कनेक बेसिये अतीत मे चलि जाइत छी । मुदा आइ हम अहाँ कें तीने मास पहिलुका गप मोन पाड़ै चाहैत छी—युधिष्ठिर बाबू ।

युधिष्ठिर—रह' रह' । हम सुनैत छी ठीके, मुदा कनेक देर सँ । तों भरिसक हमरा चाचा जी वा एहने किछु कहैत छलह । ठीक मन नहि अछि । तखन कतबो किछु हो—छलहुँ त तोहर बाबू जी क मित्र—तें......

अनिरुद्ध—मित्र ! हँ, मित्रे छलहुँ । बाबू जी क जिनगीक माटि पानि कें अपन ताप सँ सोखि कए, छोड़ि देलहुँ ।

युधिष्ठिर—भाषा पर तोरा नीक दखल छह ।

अनिरुद्ध—आरो बहुत किछु पर हमर अधिकार अछि ।

युधिष्ठिर—मुदा अनिरुद्ध, सुरुज जकाँ हम नहि रहितहुँ, त तोहर पितृ देव-आ हुनक माटि पानि ने की ने कहलह—सब कहिया ने शेष भ' गेल रहैत !

अनिरुद्ध—की भेल रहैत से हम नहि जनैत छी । मुदा की भेल अछि से सबटा जनैत छी ।

युधिष्ठिर—ओ ! [कहैत सिगरेट बहार कए ताहि मे अग्नि-संचार करैत छथि]

अनिरुद्ध—[युधिष्ठिर क मन्तव्यक उपेक्षा करैत] हम जनैत छी बाबू जी

क मृत्यु कोनो स्वाभाविक मृत्यु नहि छल। [कहि कए युधिष्ठिर क मुख-भंगिमा क प्रति दृष्टि निक्षेप करैत छथि।]

युधिष्ठिर—[बड़ स्वाभाविक जकाँ कश लैत छथि आ' तखन कहैत छथि] बेचारा! [सिगरेट केस बढ़ा कए] लेह जौं चलैत होइक।

अनिरुद्ध—[सिगरेट दिसि बिना देखनहि कहैत छथि] और हुनक मृत्यु क लेल दायी छथि युधिष्ठिर बाबू।

युधिष्ठिर—सत्ते? [हँसि दैत छथि। सिगरेट कें फेंकैत आ' पीसैत] आइ बड़ गर्मी अछि। [एकटा अखबार उठा कए हौंकै लगैत छथि।]

अनिरुद्ध—[एक दृष्टियें युधिष्ठिर क सब भाव-भंगिमा कें लक्ष्य करैत छथि] अहाँ हमर प्रश्न क उत्तर नहि देलहुँ!

युधिष्ठिर—[अखबार सँ हौंकब बन्द करैत] आँय! तों कोनो प्रश्नो कैने छलह की?

माय—ओकर प्रश्न कें छोड़ि दियह। हमरे किछु पुछबा क अछि।

युधिष्ठिर—पूछू!

माय—हम सब अहाँ क की बिगाड़ने छलहुँ जे अहाँ हुनका सँ सबटा छीनि कए हुनका असहाय क' देने छलहुँ।

युधिष्ठिर—[हँसैत] हुनका कहिया किछु छल जे हम छिनतहुँ?

अनिरुद्ध—कियैक? अहाँ कि कहै चाहैत छी जे ओ अहाँ क कम्पनी क पार्टनर नहि छलाह?

युधिष्ठिर—ओ कम्पनी क मैनेजर छलाह, आरो सोझ भाषा मे कहने ओ कम्पनी क नौकर छलाह—मालिक नहि।

अनिरुद्ध—[व्यंग्य करैत] तकर बाद अहाँ कहब, ई मकानो हुनकर नहि छलन्हि।

युधिष्ठिर—वाह! तों कोना जानि गेलह ई असल बात! जे हो, जखन से जानिये गेलह, तखन सुनह—ई मकान, ई फर्निचर—सब किछु कम्पनी क सम्पत्ति थीक। तोरा सब कें ई सब किछु छोड़ै पड़तह।

हमर नवका मैनेजर आबि रहल छथि—ओ एतय रहताह। बुझलह ?

माय—हे भगवान ! ई कोन पाप क दण्ड द' रहल छी। [कानै लगैत छथि—मुँह झाँपि कए।]

अनिरुद्ध—[माय सँ] ठहर माय—हम एना नहि सब किछु छोड़ि देबन्हि। [युधिष्ठिर सँ] अहाँ क पास कोनो प्रमाण अछि जे ई मकान हमरा सभक नहि थीक, अहाँ क थीक ?

युधिष्ठिर—पहिने-पहिन तोहर बाबुओ तेजगरे छलाह। तैं ने हुनका रखने छलहुँ। आ'......

अनिरुद्ध—अहाँ हमर प्रश्न क उत्तर नहि देलहुँ।

युधिष्ठिर—[पदचारणा करैत] तोहर प्रश्न क उत्तर भेटि जैतह, जौं हमर एक प्रश्न क उत्तर द' सकह। [थम्हि कए] तोरा पास कोनो प्रमाण छह जे ई मकान तोहर बाबूजी क छलह ?

अनिरुद्ध—[माय क दिसि देखैत] माय ! [उत्तर मे माय मात्र अस्वीकारात्मक भंगी मे माथ डोलबैत छथि] की कहैत छें माय—मकान क कोनो कागज-पत्तर नहि छौक ?

युधिष्ठिर—[उच्च स्वरें हँसि दैत छथि] कोना रहत कागज-पत्तर ? ओ त हमरहि पास छल।

अनिरुद्ध—तखन अहाँ की चाहैत छी ?

युधिष्ठिर—एहि मकान कें साफ देखै चाहैत छी। तीन दिन क भीतर मकान खाली भ' जैबाक चाही।

अनिरुद्ध—असम्भव ! सब काज क एकटा नियम होइत छैक। अहाँ हमरा सब कें तीन मास सँ पूर्व हँटा नहि सकैत छी।

युधिष्ठिर—थम्हह ; हमरा नियम नहि देखबह ! जे तीन दिन हम समय देने छियन्हु सेहो कृपा कैने छी। कान खोलि कए सुनह—तोहर बाबूजी कें हम तीन मास पूर्व कम्पनी क नौकरी सँ अलग क' देने रही—आ' तखनहि मकानो छोड़बाक नोटिस हम द' देने छलियन्हि।

माय—मुदा कियैक ? ओ की कैने रहथि ?

युधिष्ठिर—तखन सेहो सुनि लेह—ओ बिना अनुमति क' बिना लिखा-पढ़ीक अपन मर्जी सँ कोनो मित्र कें टाका उधार देने रहथि। असल बात की छल से ईश्वरे जानथि—हुनकर कहब इयैह छलन्हि। आबि कए हमरा हाथ पैर जोड़लन्हि त जहल नहि पठौलियन्हि; नहि त—[प्रसंग कें बदलैत] जे हो ! हमरा ताहि सब बात सँ कोनो प्रयोजन नहि अछि। हम......

अनिरुद्ध—ओ कत्तेक टाका नेने रहथि ?

युधिष्ठिर—[व्यंग्य करैत कहैत छथि] कियैक—तों द' देबहक की ? ओ पचास हजार टाका गबन कैने रहथि।

अनिरुद्ध—प - चा - स - ह - जा - र !

युधिष्ठिर—की भेलह ! कहलह नहि—हम चेष्टा करब पूरा देबाक, जेना नाटक सब मे कहैत छैक ?

अनिरुद्ध—स्-से हम......

युधिष्ठिर—[बाधा दए] बस-बस—आब किछु नहि कहह ! तोरा सँ हमरा पचासो टाका क आशा नहि अछि। हमर मकान खाली क' देह त बहुत कृपा हैतह। [पाछाँ घुरि कए प्रस्थान करबा लेल उद्यत होइत छथि। आ' तखनहि घुरि कए आदेशात्मक स्वर मे कहैत छथि] मन रहय, मात्र तीन दिन समय देने छी—ताहि सँ फाजिल एको क्षण नहि...... [युधिष्ठिर बाबू मंच सँ निष्क्रान्त भ' जाइत छथि। अनिरुद्ध घुरि कए माय दिसि देखैत छथि। माय क्रन्दन क वेग कें सम्हारैत मंच सँ निष्क्रान्त भ' जाइत छथि। अनिरुद्ध दर्शक दिसि अगुआ अबैत छथि। मंच क प्रकाश कम भ' जाइत अछि। अनिरुद्ध क मुख-मंडल अल्परेख सँ आलोकित देखना जाइत अछि। अनिरुद्ध अपन वक्तव्य शुरू करैत पहिलुका पोशाक खोलै लगैत छथि। तर सँ फाटल-पुरान पोशाक लखा दैत अछि।]

अनिरुद्ध—तकर बाद, जे अवश्यम्भावी छल, जकरा रोकबाक इच्छा रहितहु हमरा मे क्षमता नहि छल—सैह भेल। जाहि परिवेश मे हमर शैशव बीतल, से परिवेश बदलि गेल। हमर आगाँ सँ, हमर पाछाँ सँ सब किछु चलि जाइत रहल कतय ने! हम आब एकटा सम्पूर्ण नव परिवेश मे ठाढ़ छलहुँ। मकान आ' तकर सब सुविधा छोड़ै - पड़ल। आबि गेलहुँ एकटा छोट-छीन नरक मे—जतय माथ ऊँच' क' कए ठाढ़ होमय जाइत छी त छत बाधक भ' जाइत अछि—[हँसैत] जेना लिखा रहल हो जे आब जखन कि हमरा पास पाइ कौड़ी नहि अछि—तखन माथ झुका कए जीयब छोड़ि हमरा पास अन्य कोनो उपाय नहि। [पदचारणा करैत] सब किछु बदलि रहल छल, बदलि गेल छल—हमर परिवेश, हमर पोशाक —भरिसक हमहूँ। पहिने झुकबाक प्रयोजन नहि छल। मुदा आब ? [म्लान रूपैं हँसैत] आब कनेक अन्न क लेल, कनेक अर्थ क लेल सभक सामने झुकै पड़ैत अछि। पहिने जाति क गर्व छल, उच्चवर्ण क गर्व छल, धर्मक गर्व छल—सब कतय ने भसिया गेल। एखन देहक सब अंग बेकार भ' गेल अछि, सबटा सुतल अछि—जेना मुइल लोग क रहैत छैक। मात्र एकहि अंग जागल चीत्कार क' रहल अछि—आ' ओ थीक [पेट कें देखबैत] पेट। [एतबा मे नेपथ्य सँ कोनो स्वर भासल अबैत अछि कि अनिरुद्ध कनेक उठैत छथि।]

सुयोधन—[सुयोधन क भूमिका मे कमल अभिनय करैत छथि। सुयोधन वृद्धप्राय व्यक्ति छथि,—आँखि मे चश्मा, हाथ मे घड़ी—केस कतहु-कतहु सफेद छन्हि। पोशाक सँ शौखीन बुझना जाइत छथि। ओ तावत् नेपथ्य सँ चीत्कार करैत छथि] अनिरुद्ध छी औ......
अनिरुद्ध !! ई त क्यो जवाबे नहि दैत अछि। अनिरुद्ध—छी औ।

अनिरुद्ध—[दरबाजा दिसि अगुअबैत] के छी ? आउ, भीतर आउ !

सुयोधन—[प्रविष्ट होइत] ओफ ! बाप रे बाप !! खोजैत-खोजैत हम...

ताहि पर सँ ई गर्मी......[एतबा अपनहि मने कहि रूमाल सँ मुँह पोछैत आब अनिरुद्ध दिसि देखैत] अहाँ क एतय त पंखो......[ऊपर देखि कए पुनः चारूकात देखैत छथि।] अनिरुद्ध घर क कोना सँ एकटा टुटल सन कुर्सी आनि कए हिनका आगाँ रखैत छथि। ओ कुर्सी कें हाथ सँ टेबैत छथि, मुख मे कौतुक आ' अप्रसन्नता क चेन्ह आ' पुनः कहैत छथि] रहै दियह। इयैह जे ठाढ़ अछि, ताही सँ हम सन्तुष्ट छी। [अपन मन्तव्य पर अपनहि हँसैत छथि] हें-हें-हें। [कनेक थम्हैत छथि] घर मे और किनकहुँ नहि देखैत छियन्हि......

अनिरुद्ध—माय गेल छथि एक काज सँ आ'......

सुयोधन—[कौतुक सँ भरल स्वर मे] दासीवृत्ति !

अनिरुद्ध—माने ?

सुयोधन—अहाँ क माय कें, हमरे एकटा परिचित, नन्दू सेठ क ओतय नौरी राखि लेल गेल छैक !

अनिरुद्ध—नहि-नहि—ई कथमपि नहि भ' सकैत अछि।

सुयोधन—[हँसैत] से नहि होइत, त आइयो हम अहाँ क सन्धान मे बौअबिते रहितहुँ। ओतय हुनका देखिये कए नन्दू सेठ सँ मकान क ठेकान पूछलहुँ त पता लागल जे एखन डेविड एण्ड कम्पनी क मैनेजर क डेरा एतय आबि गेल छैक। हें-हें-हें। [अनिरुद्ध कें सान्त्वना दैत] से अहाँ क लज्जा क कोनो कारण नहि। अहाँ क माय सेठ क ओतय हमरा नहि देखलन्हि—हमहींटा हुनका काज करैत देखने छलहुँ।

अनिरुद्ध—ओफ ! एहि सँ त......[मुँह झाँपि लैत छथि।]

सुयोधन—नहि-नहि-नहि—कथमपि नहि। एहि सँ मरब कखनहु नीक नहि। अनिरुद्ध—[मुँह पर सँ हाथ हटा कए हिनका दिसि देखैत छथि] देखू ने—अहाँ क बाबूजी त मरि कए झमेला सँ मुक्त भ' गेलाह। लोग कहैत अछि लोग एहि पृथ्वी पर खाली हाथ अबैत अछि, खालिये हाथ जाइत अछि। मुदा अहाँ क पिताजी, हें-हें, आयल त छलाह खालिये

हाथ, मुदा गेलाह मुट्ठी मे टाका बकोटने......हें-हें-हें !

अनिरुद्ध—की कहैत छी ?

सुयोधन—हमरा सँ ओ पचीस हजार टाका उधार नेने रहथि। सुनल अछि, अहाँ क बड़की बहिन क बियाह खूब धूमधाम सँ भेल छल। बियाह दिन हम नहि छलहुँ कि नहि, तेँ अपन आँखि सँ नहि देखि सकलहुँ......हें-हें-हें !

अनिरुद्ध—से की ? मुदा बाबूजी त कहने छलाह जे ओ प्रॉभिडेण्ड फण्ड मे सँ निकालि कए......

सुयोधन—[उच्च स्वरें हँसैत कहैत छथि] प्राविडेण्ट फण्ड ! कतय गेल से टाका एकर पता ककरहु नहि चलल। मुदा हम जनैत छी से टाका कतय गेल।

अनिरुद्ध—कतय गेल ?

सुयोधन—हें-हें-हें; कोनो काज करब त तकर मोल त चुकाबहि पड़त। बेचारे युधिष्ठिर बाबू ! चोरी भेलन्हि पचास हजार क आ' प्राविडेण्ट फण्ड हँसोति कए भेंटलन्हि तीसे हजार।

अनिरुद्ध—नहि; हमर बाबूजी चोर नहि छलाह।

सुयोधन—हें हे-हें ! से हम कतय कहलहुँ ? ओ एहन दू-एकटा भूल लोग सँ भइये जाइत छैक। टाका दैत काल हमहूँ तोहर बाबूजी सँ इयैह बात कहने छलियन्हि।

अनिरुद्ध—[डरैत जकाँ] की कहने छलियन्हि ?

सुयोधन—इयैह जे टाका त अपने रखनहि छी; तखन पुनः हमरा सँ कियैक लैत छी ? प्राविडेण्ड फण्ड सँ टाका काटियो लेलन्हि त युधिष्ठिर बाबू की लेलन्हि ? तैयो त बीस हजार टाका मुनाफे......त ओ बिगड़ि गेल छलाह। कहै लगलाह हम चोरी नहि कैने छी। हे-हें-हें ! तखनहि हम कहने छलहुँ—अहाँ चोरी नहि कैने हैब; मुदा भूल जौं भइये गेल होइक—आ' भूल त होइते छैक। हें-हें-हें !

अनिरुद्ध—नहि नहि, ई सब किछु मिथ्या थीक। [सुयोधन क कुर्त्ता ध' कए] अहाँ कहू—ई सब फूसि थीक।

सुयोधन—[अनिरुद्ध क हाथ हँटबैत, कुर्त्ता क तह कें ठीक करैत] ई सबटा सत्य थीक—शत-प्रतिशत सत्य। मुदा, ताहि लेल हम तोहर बाबू कें दोष नहि दैत छियह। ओ जे हमरा सँ टाका लेलन्हि से ठीके कैलन्हि। नहि त पकड़ा गेल रहितथि। तोहर बहिन क बियाह क तीन चारि दिन पहिनहि ई सबटा काण्ड भ' गेल छल ? लेकिन जे कही, दिमाग हुनकर खूब छलन्हि। हम कहैत रहि गेलयन्हि जे अरे, अपने टाका लेब त ताहि मे लिखा-पढ़ी क कोन गप ? मुदा ओ जबर्दस्ती बाकायदा लिखा-पढ़ी क' लेलन्हि [उच्च स्वरें हँसैत] जाहि सँ क्यो कहि नहि सकय जे चोरी क टाका सँ बेटी क बियाह क' रहल छथि। नहि, सच्चे......हम त हुनका गुरु मानैत छियन्हि [दुनू हाथ जोड़ि कए भक्तिपूर्ण प्रणाम जनबैत छथि]।

अनिरुद्ध—मुदा यदि ओ टाका लेनहि रहथि, त कतय अछि ओ टाका—कतय रखलन्हि ?

सुयोधन—आश्चर्य ! अहूँ, देखैत छी, अपन बाबूजी सँ कम नहि छी।

अनिरुद्ध—माने ?

सुयोधन—तखन तकरो अर्थ बुझाबै पड़त ? [अनिरुद्ध कें हँ-नहि किछु नहि कहैत देखि] अहाँ की बुझैत छी जे अहाँ सभक एहि बस्ती मे रहब—एहन कपड़ा पहिरब—अहाँ क माय क चुनि कए नन्दू सेठ क ओतय काज लेब, सेहो नौरी क—ई सभक अर्थ हम नहि बुझैत छी ?

अनिरुद्ध—अहाँ की कहै चाहैत छी ?

सुयोधन—इयैह जे ई सबटा अहाँ सब नाटक क' रहल छी। टाका नुका कए सभक दृष्टि ओहि बात पर सँ हँटाबै चाहैत छी।

अनिरुद्ध—टाका नुकौने छी हम......हम सब ?

सुयोधन—हँ, हँ ! अहीं सब। मुदा जानि राखू, से नहि हैत। हमरा

अहाँ सब धोखा नहि द' सकैत छी। हमहूँ छी सुयोधन ठाकुर—बुद्धि क युद्ध मे हम पछुआयल नहि रहब।

अनिरुद्ध—हमरा पास टाका रहैत त हम सब एतय एहि अवस्था मे रहितहुँ ?

सुयोधन—हें-हें-हें ! से टाका तेहने ने वस्तु थीक जे—कहियो कखनहु हमहूँ अभिनय क' लैत छी। ताहि मे कोनो हर्ज नहि। से अहाँ बाहर क लोग क संग जे करैत छी करू—हम कि ताहि लेल दोष दैत छी अहाँ कें ? मुदा [पास आबैत] सत्ते कहू त, कोन बिजिनेस क लेल सोचि रहल छी ?

अनिरुद्ध—[क्रोध सँ उन्मत्तप्राय भ' कए] सुयोधन बाबू ! बन्द करू अपन बकवास आ' निकलि जाउ एतय सँ।

सुयोधन—कि-कियेक ? हम कोनो बेजाय बात कहलहुँ ? अहाँ क सुविधेवला गप कहैत छलहुँ—हमर देल ओ टाका तावत् ताही मे लगा दितहुँ आ' अहाँ क त कोनो अनुभव नहिये अछि एहि लाइन मे—तें.........

अनिरुद्ध—बन्द करू, बन्द करू अपन ओ पापी मुँह, नहि त......

सुयोधन—[क्रुद्ध भ' कए] नहि त की ? [मुँह दुसैत] पापी मुँह—टाका गबन केनाइ पाप नहि, किन्तु ताहि विषय पर किछु कहब पाप भ' जाइत छैक।

अनिरुद्ध—हम कोनो टाका गबन नहि कैने छी, ने हमर बाबूजीये कैने छथि। अहाँ कें दरबाजा देखल अछि त सीधा निकलि जाउ नहि त हम देखा रहल छी।

सुयोधन—की ? एहन बात ? अच्छा, त लाउ हमर पचीस हजार टाका। दरबाजा हम अपनहि चीन्हि लेब। [अनिरुद्ध कें चुप देखि] की भेल ? लाउ टाका !

अनिरुद्ध—टाका एखन हमरा पास नहि अछि।

सुयोधन—त कखन आबी—कालिह, परसू ? कि अहूँ अपन बाबूए जकाँ पड़ैबाक चेष्टा मे छी; नहि दुनिया सँ त शहरे सँ......? [कनेक थम्हैत] अपन चोरी क माल अहाँ कत्तहु राखू ताहि सँ हमरा कोनो मतलब नहि अछि। मुदा हमर टाका चोरी क नहि थीक। तेँ से हमरा घेंटि जैबाक चाही, बुझलहुँ ?

अनिरुद्ध—कहलहुँ त, एखन हमरा ने टाका अछि, ने सम्पत्तिये जे चुरायब।

सुयोधन—[आँखि लोभ सँ धधकि उठैछ] सम्पत्ति त अछि, मुदा......

अनिरुद्ध—कतय अछि ?

सुयोधन—अहाँ क सामनहि अछि। मुदा, ओ सम्पत्ति कतबाक अहाँक माय क वा अहाँ क रहि गेल अछि ताहि मे सन्देह अछि।

अनिरुद्ध—की थीक ओ ? हमरा त पता नहि अछि।

सुयोधन—हें-हें-हें; पता त रहबाक चाही—गली-मुहल्लाक सब लोग कें पता छैक आ' अहीं कें नहि अछि ? इयैह एखनहु त अतीत काल बस्ती क चाह क दुकान मे ओहि सम्पत्ति क विषय मे छौंड़ा सब बातचीत क' रहल छल—[कुरुचि पूर्ण इंगित करैत] दू हाथ दू पैर वला जीवन्त सम्पत्ति।

अनिरुद्ध—अहाँ की कहै चाहैत छी, साफ साफ बाजू !

सुयोधन—हम अहाँ क छोट बहिन द' बाजि रहल छी।

अनिरुद्ध—की ? अहाँ क एत्तेक साहस ......[क्रोधें काँपे लगैत छथि]।

सुयोधन—आ-हा-हा गोसाउ जुनि। टाका दैत काल अहाँ क बाबुओ जी कें हम कहने छलियन्हि जे बड़की बेटी क बियाह जेना भेल नीक जगह कैये देलहुँ—आ महगे पड़ल। मुदा छोटकी क लेल कोनो चिन्ता नहि; जावत् हम जीबैत छी.........

अनिरुद्ध—[चीत्कार करैत] शैतान ! हम तोहर खून पी जेबौक [कहैत सुयोधन क कंठ दाबै लगैत छथि। सुयोधन दुनू हाथ सँ अनिरुद्ध सँ बचबाक चेष्टा करैत छथि। हुनक कंठ सँ विभिन्न प्रकार क शब्द

निकलै लगैत छथि आ' एहि अवस्थे मे अनिरुद्ध कहैत छथि] तोहर एत्तेक साहस ! [तावत मंच पर शान्ता अर्थात् अनिरुद्ध क प्रेमिका क भूमिका मे सती क प्रवेश होइछ। अंग-सजा सँ आभिजात्य क छाप स्पष्ट अछि, मुदा कत्तहु उग्रताक कोनो चिह्न नहि देखना जाइत अछि। ओ प्रविष्ट भए दुनू कें एहि अवस्था मे देखि कए डेरायल जकाँ चीत्कार क' उठैत छथि।]

शान्ता—अनिरुद्ध ! ! [अनिरुद्‍ध चौंकैत सुयोधन क कंठ छोड़ि दैत छथि।] की क' रहल छी अहाँ ? [अनिरुद्‍ध आ' सुयोधन दुनू गोटे उत्तेजना क कारणें हाँफैत देखना जाइत छथि।]

सुयोधन—[हाँफैत मुदा कपड़ा-लत्ता कें ठीक करैत] अहाँ के छी हमरा पता नहि। मुदा जे होउ, अहाँ हमर प्राण बचा लेलहुँ। नहि त आइ ई......[कहैत अनिरुद्‍ध दिसि देखैत छथि। अनिरुद्‍ध आन दिसि मुँह धुरा कए माथ झुका कए ठाढ़ रहैत छथि।]

शान्ता—कियैक ? अहाँ की कैलहुँ जे......

सुयोधन—करब की ? हमर पचीस हजार टाका हिनक बाबू जी लेने छलाह। सैह माँगै आयल छलहुँ—एतबहिटा दोष भेल छल।

शान्ता—ओ ! [कनेक सोचैत] ठीक अछि, अहाँ एखन जाउ। आ'......

सुयोधन—मुदा हमर टाका.........?

शान्ता—अहाँ परसू हमरा सँ भेंट करू त देखल जायत।

सुयोधन—मुदा अहाँ कें त हम......[वाक्य कें विलम्बित करैत छथि]।

शान्ता—अहाँ सुदर्शन चौधरी क नाम सुननहि हैब.........।

सुयोधन—हँ हँ, हुनक नाम के नहि जनैत अछि एहि शहर मे ?

शान्ता—हम हुनक कन्या थिकहुँ। हमर नाम थीक शान्ता।

सुयोधन—[परिचय पाबि सुयोधन क भावे बदलि जाइत छन्हि] ओ ! अच्छा, अच्छा ! त-त हम परसू आयब। अ-अच्छा नमस्कार। [एक बेर अनिरुद्‍ध क दिसि देखैत निष्क्रान्त होइत छथि]।

शान्ता—[किछु देर दुनू चुप रहैत छथि। अनिरुद्ध मुँह पाछाँ घुरौने टूटलका कुर्सी पर दुनू हाथ रखने ठाढ़ रहि जाइत छथि। शान्ता अनिरुद्ध दिसि कनेक अगुआ कए शान्त स्वरेँ पुकारैत छथि] अनिरुद्ध !

अनिरुद्ध —[शान्ता कें किछु कहबाक मौका बिना देनहि] हम जानैत छलहुँ अहाँ कें अनेक रास टाका अछि; मुदा से एहि तरहेँ हमरा देखैबाक कोन प्रयोजन छल ?

शान्ता—हम अहाँ क अपमान नहि कल अछि। ध' लियह ई हमरा पास अहाँ क उधार रहल।

अनिरुद्ध—[पाछाँ घुरि कए] मुदा से कियैक ?

शान्ता—एकटा बाहर क लोग आबि कए रोज टाका क तगादा करत, ताहि लेल रोज अहाँ कें झुकै पड़त, भागै पड़त, नहि त गारि सुनै पड़त—से हम नहि चाहैत छी !

अनिरुद्ध—[शान्ता दिसि एकटक देखैत] अहाँ एतय कियैक आयल छी शान्ता ?

शान्ता—[प्रश्न क उत्तर नहि देबाक लेल उच्छ्वल कंठ सँ कहै लगै छथि] जनैत छी, कोना ऐलहुँ एतय ? कतय-कतय जाय पड़ल अहाँ क ई पता खोजबाक लेल !

अनिरुद्ध—[बिच्चहि मे शान्ता क बात कें काटैत] ई हमर प्रश्न क उत्तर नहि भेल। हम पुछने छलहुँ......

शान्ता—[गम्भीर स्वरें कहैत छथि] जनैत छी। अहाँ पुछने छलहुँ, हम एतय कियैक आयल छी।

अनिरुद्ध—गरीबी क उपहास करबाक लेल कि भूखल मनुष्य केहन होइत अछि से देखबाक लेल ?

शान्ता—ई सब किछु नहि अनिरुद्ध। अहाँ नीक जकाँ जनैत छी हम कियैक आयल छी—मात्र अहाँ कें देखबाक लेल।

अनिरुद्ध—की अनने छी हमरा लेल ?

शान्ता—की अनने छी ? अहाँ लेल हम सब किछु अनने छी—हम, हमर प्रेम—

अनिरुद्ध—[उच्च स्वरें हँसैत] प्रेम ? अहाँ प्रेम अनने छी ? [पुनः हँसै लगैत छथि।]

शान्ता—हँसि रहल छी ?

अनिरुद्ध—देखू शान्ता, नीक जकाँ सुनू हमर ई हँसी। बड़ मोल अछि एकर। सुनैत छी, भूखल पेट मे हँसी बड़ महग पड़ैत छैक—कानब सस्त। देखू अहाँ क लेल हम कतोक महग वस्तु उपहार मे द' रहल छी। [पुनः हँसै लगैत छथि]।

शान्ता—अनि—अनिरुद्ध ! प्लीज चुप भ' जाउ। हमरा डर लगैत अछि।

अनिरुद्ध—कथीक डर शान्ता ?

शान्ता—डर होइत अछि, हमरा छोड़ि अहाँ कतहु चलि नहि जाइ। अहाँ ओ मकान छोड़लहुँ आ' ककरहु पता बिना बतौनहि एतय चलि ऐलहुँ। ई पनरह दिन—हमर दिन हमर राति सब नमहर भ' जाइत छल। हमरा एको क्षण क लेल शान्ति नहि भेंटल।

अनिरुद्ध—की आश्चर्य ! क्यो भूख क लेल राति-राति भरि सुति नहि सकैत अछि आ क्यो मात्र एकटा सौख क लेल जागल रहैत अछि।

शान्ता—हमर प्रेम मात्र सौख थीक—ई अहाँ कहैत छी ?

अनिरुद्ध—हँ-हँ; हम कहैत छी। ई प्रेम-त्रेम थीक ओहि सब लोग क लेल, जकरा पेट भरबाक चिन्ता नहि रहैत छैक।

शान्ता—ई अहाँ की कहि रहल छी अनिरुद्ध ? अहीं त कहने छलहुँ जे पेट प्रेम मे बाधक नहि होइत छैक।

अनिरुद्ध—से भरल पेट मे कहने छलहुँ शान्ता। तखनुका बात सब बिसरि जाउ।

शान्ता—नहि-नहि। से नहि भ' सकैछ। तखन... ..तखन हम जीयब कथी ल' कए ? अहाँ एना नहि कहू।

अनिरुद्ध—अहाँ सुखी छी शान्ता। एखन हम सुख कें घृणा करैत छी।

शान्ता—जौं अहाँ क दुःख क दिन मे हमर सुख काज नहि देलक त ओहि प्रेम क कोनो मोल नहि। हम अहीं लेल आयल छी। अनिरुद्ध, हम दुःख बाँटि लेब—अहाँ हमर सुख लियह।

अनिरुद्ध—हम अहाँ क करुणा नहि चाहैत छी।

शान्ता—मुदा हम अहाँ क करुणा चाहैत छी। अहाँ हमर सहायता करी त हम ठीक तरहें बाबू जी क बिजिनेस सम्हारि सकैत छी। जनिते छी—ओ एक महीना सँ लकबा सँ विवश भ' कए पड़ल छथि आ' हमरा ऊपर पड़ल अछि समस्त दायित्व। ने भाइ अछि, ने बहिन, जे ताहि मे सहायता भेंटत। हमर अवस्था समुद्र मे भासल नाव जकाँ अछि, जकरा खेबैया क प्रयोजन छैक।

अनिरुद्ध—हमरा नाव खेबै नहि अबैत अछि शान्ता। अहाँ कोनो नीक माझी क सन्धान करू।

सूत्रधार—[मंच क पार्श्व-पट्टिका दिसि सँ बहरा कए कनेक आगाँ बढ़ैत] ई अहाँ की कहि देलहुँ अनिरुद्ध? अहाँ क डायलाग त एहन नहि छल। [सूत्रधार क प्रवेशक संगहि शान्ता प्रस्तरीभूत भ' जाइत छथि।]

अनिरुद्ध—अहाँ के छी ?

सूत्रधार—हम छी सूत्रधार—प्राम्प्ट करैत छी, मोन पाड़ि दैत छी ककरा कखन की कहबाक अछि।

अनिरुद्ध—तखन हमरा एखन की कहब उचित छल ?

सूत्रधार—[एक लम्बा और मोट बही निकालि कए तकर किछु पन्ना उनटा कए एक जगह थम्हैत पढ़ैत छथि] हँ, शान्ता, हम......हम हैब ओ खेबैया......हम अहाँ कें डुबै नहि देब।

अनिरुद्ध—[शान्ता दिसि घुरैत] नहि हम अहाँ क कोनो सहायता नहि क' सकब।

सूत्रधार—कहू अहाँ हमरा समय दियह शान्ता।--तकर बाद हम दुनू फेरो

अदृश्य भ' जाइत अछि।]

नाट्यकार—[मंच क एक प्रान्त मे ठाढ़ नाट्यकार पर अल्परेख पड़ैत अछि। नाट्यकार क कथन प्रारम्भ हेबा सँ पहिने धरि अनिरुद्ध क खोंखी सुनाइ पड़ैछ।] तकर बाद जे हैबा क छल, सैह भेल। अनिरुद्ध क माय कें बेसी दिन धरि कष्ट नहि करै पड़लन्हि। तकर पहिनहि ओ एहि लोक सँ चहि गेलीह। दू-एक सहृदय लोग डाक्टर सँ अनिरुद्ध क जाँच करौलन्हि त पता चलल जे ओकरा कैंसर छैक। ओ खोंखी ओहिना नहि होइत छल। तावत् परिवार क आतिथ्य स्पष्ट भ' उठल छल—गरीबी क समुद्र मे डूबैत जहाज। पिता पहिनहि चलि गेलाह, माता सेहो नहि रहलीह। आब अनिरुद्ध बढ़ि रहल छलाह मृत्यु दिसि। हुनक छोट बहिन बूझि गेल छल जे एहि जहाज कें बिना छोड़ने जीबा क आशा नहि। तैं ओ अपन नारीत्व क मोल दए सुयोधन ठाकुर क हाथ पकड़ि लेलक। ओ डूबै सँ बचि गेल। [नाट्यकार जावत धीरे-धीरे एहि कथा क वर्णन करैत छथि तावत् अनिरुद्ध अपन पुरनका पोशाक पहिरि लैत छथि—फटलका कुर्त्ता और पैजामा। नाट्यकार अगुआ अबैत छथि। लगले अनिरुद्धो आगाँ बढ़ैत छथि।]

अनिरुद्ध—[आगाँ बढ़बाक संगहि संग हुनकहुँ पर अल्परेख पड़ैत छन्हि।] आ तखन जिनगी क दोसर रूप देखि कए हम क्लान्त भ' गेल छलहुँ—हम सब किछु सँ मुक्ति चाहैत छलहुँ। हमरा एकटा बहुत पहिनुका घटना मन पड़ि जाइत छल।

नाट्यकार—केहन घटना ?

अनिरुद्ध—मन पड़ि रहल अछि—बाबूजी हमरा कत्तेक नीक-नीक कहानी सुनबैत रहथि—उपनिषद् सँ—हितोपदेश सँ। तखन हम सब किछु बुझितो नहि छलहुँ। बहुत किछु त बिसरि गेल छलहुँ। मुदा हुनक एक बात एखनहु हमरा मन मे घूरि रहल अछि—सत्यं वदेत्, सत्यमा-

पहिलुके जकाँ......।

अनिरुद्ध—अहाँ ठाढ़ कियैक छी शान्ता; अहाँ जाउ । अहाँ कें हमर सपत ! अहाँ हमरा अपनहि हाथ मे छोड़ि दियह । हम सब कहियो अतीत मे घुरि नहि सकैत छी—हमरा सभक ओ पुरनका दिन सब कहियो घुरि कए नहि आओत ।

[शान्ता पुनः स्वाभाविक भ' जाइत छथि ।]

शान्ता—हमरो अतीत नहि चाही अनिरुद्ध। आउ—हम सब नव तरह शुरू करी। भरिसक हमरा सभक प्रार्थना मे किछु भूल छल— तकरहि फल आइ भोगि रहल छी ।

सूत्रधार – [अनिरुद्ध सँ] कहू ; हँ शान्ता, हम नव तरहें शुरू करब ।

अनिरुद्ध—नहि शान्ता, आब किछु नहि भ' सकैत अछि ।

शान्ता—कियैक नहि भ' सकैत अछि—हमरा अपना पर विश्वास अछि—ओ विश्वास हम अहाँ सँ पाओल अछि। कारण, हम अहाँ सँ प्रेम करैत छी अनिरुद्ध ।

सूत्रधार—कहू, हमहू अहाँ सँ प्रेम करैत छी ।

अनिरुद्ध—[उत्तेजित भए] मु-मुदा हम अहाँ सँ घृणा करैत छी शान्ता, घृणा !

शान्ता—अनिरुद्ध !

सूत्रधार—अनिरुद्ध !!

अनिरुद्ध—[उन्मत्त जकाँ चीत्कार करैत] प्लीज ! अहाँ सब जाउ—चलि जाउ ! [सूत्रधार पाछाँ बिना घुरने अनिरुद्ध दिसि देखैत पछुआ कए पार्श्व-पट्टिका क पास चलि जाइत छथि। एम्हर अनिरुद्ध थम्हैत, उत्तेजित, मुदा थाकल स्वर मे कहैत छथि ।] अहाँ सब जाउ। हमरा एसगर छोड़ि दियह एहि युद्धभूमि पर । [कहबाक संगहि संग समस्त आलोक सिमटि कए मात्र हुनकहि पर पड़ैत छन्हि ।] हमरा... हमरा एसगर लड़ै दियह । [कहैत खोंखै लगैत छथि। अल्परेखो

चरेतु-सत्य कहू, सत्य आचरण करू! [कनेक चुप रहि कए] हमहूँ आपन जिनगी मे भरिसक सैह करैत ऐलहुँ, जेना हमर बाबूजी कैने छलाह। एखन सोचि रहल छी जे हमरा सभ क विरुद्ध जे अन्याय भेल, तकर विरुद्ध हम किछु नहि क' सकलहुँ—एही लेल ने जे हमर हथियार दुर्बल छल। हमर हथियार छल सत्य। दरिद्र क हथियार केवल सत्य नहि भ' सकैछ। जेना केवल सोना सँ गहना नहि गढ़ल जाइत अछि, भरिसक तहिना—

नाट्यकार—तहिना की ?

अनिरुद्ध—तहिना मात्र सत्य सँ जिनगी कें जीयल नहि जा सकैछ। जौं हम ककरहु सँ पुछबो कैलहुँ ज 'भाइ तों कहियो झूठ बजलह—बेजाय काज कैलह ?'—त सब हँसि कए उत्तर दैत अछि—'युधिष्ठिर कहियो जीततथि ? जौं 'नरो वापि कुंजरो' नहि बाजितथि त ओ कि कहियो जिततथि ? बस, हम तखनहि चुप भ' जाइत छी। हमरा पास एकर कोनो उत्तर नहि अछि, कोनो उत्तर नहि। [कहि कए माथ झुका लैत छथि।]

तेसर नाटक

कमल—हम जखन स्कूल क छात्र छलहुँ, तखनहि हमरहु मन मे एहिना चिन्ता क एक बिहाड़ि उठल छल। हम अपन मन क सब प्रश्नक उत्तर खोजबाक लेल, बिहाड़ि सँ बचबाक लेल जतय खुट्टा पबैत छलहुँ तकरहि नीक जकाँ पकड़ि लैत छलहुँ। सब समय सत्य बजने लाभ जे नहि होइ छैक से हम नेनपनहि सँ बुझै लगने छलहुँ। हम ठिकौने छलहुँ जे नीक काज करब आ' नीक काज क लेल जौं कखनहु-कखनहु सत्य सँ हँटै पड़ै, त ताहि लेल पश्चात्ताप नहि करब।

अनिरुद्ध—कौन प्रश्न अहाँक मन कें सब सँ बेसी सोचबाक लेल बाध्य कैलक ?

नाट्यकार—और कोन प्रश्न अहाँक जीवन कें नाटक बना देलक ?

कमल—ताहि दिन एकहि टा प्रश्न हमरा पागल बना देने छल। [कनेक चुप रहैत] ओ प्रश्न की छल से बाद मे कहब। पहिने हमरा एक घटना कहै दियह। हमरा सभक अवस्था सबदिन नीक छल। हमर बाबू जी हमरा कोनहुँ अभाव क मुँह नहि देखै देलन्हि। हम बुझैत छलहुँ—सब क्यो एहिना छथि। हमरा घर मे बबर्ची, अर्दली, ड्राइवर—सब क्यो सब समय अपन अपन पोशाक पहिरने काज मे लागल रहैत छल—सभक मुँह मे हँसी। कानब वा जमि कए अड्डा देब—ई सब हमर बाबू जी कें कनेको पसिन नहि छलन्हि। हमरा मन पड़ैत अछि—एकबेरि जमादारनी सुखिया अपन बेटा क मुइला पर खूब कनैत-कनैत आयल छल—बाबू जी सँ टाका माँगै। बाबू जी ओकरा टाका त देल-थिन्ह, मुदा खूब डाँटबो कैलथिन्ह। बस, तकर बाद सँ कहियो क्यो कानैत नहि छल।

अनिरुद्ध—ई सब त भेल अहाँ क घटना, प्रश्न की छल ?

कमल—नहि ई सब घटना नहि, ई सब त भेल हमर परिचय। हमरा एहि सुख क कठिन किला सँ बाहर ल' जैबाक अधिकार छलन्हि दू व्यक्ति कें—एक, हमर बाबू जी कें आ' दोसर हमरा सभ क ड्राइवर मोहन काका कें। स्कूल मे जाइत काल बाबू जी अपनहि रहैत छलाह। आबैत काल हुनकर ऐबाक ठीक नहि रहैत छलन्हि, तैं बेसीदिन मोहने काका हमरा ल' अबैत छलाह। आ' किछु ऊपर क क्लास मे गेलहुँ त बाबू जी नियम बना देने छलाह जे बेरियाक पहर मोहन काका घुमा कए अनताह एम्हर-ओम्हर सँ।

सती—अपन माय क विषय मे किछु नहि कहलहुँ ?

कमल—माय हमर पड़ल रहैत छलीह बिछौनहि पर चौबीस घण्टा,

कत्तेको लोग एक किनार मे पड़ल कूड़ाक ढेर सँ की सब ने बीछि रहल छल, क्यो दू-एकटा रोगायल बच्चा कें डेंगा रहल छल ......। ई सब देखि कए हम मोहन काका सँ पुछलहुँ—मोहन काका ! ई सब एना कियैक क' रहल अछि ?' ओ कहलन्हि—छोटे बाबू ! ओ सब की करत ? कूड़ा सँ ओ सब बासी, फेकलका खाना खोजि रहल अछि—मात्र पेट क लेल। आ' भूखल बच्चा सब रोटी माँगि रहल अछि, तँ मारि लागि रहल छैक।' हमर बाबू जी पहिने रास्ता पर कोनो भिखारी कें देखैत छलाह त हमरा बुझाबैत कहैत छलाह जे ओ सब जानि बुझि कए काज नहि करैत छल। तँ हम पुछलहुँ—'कियैक भूखल अछि काका ? ई सब काज कियैक नहि करैत अछि ?' मोहन काका हँसि कए जबाब देलन्हि, 'काज ? के देतैक काज ? काज कतय छैक ?' [किछु काल चुप्प रहैत छथि आ' पदचारणा करैत छथि] तकर बाद हुनका ओतय पहुँचलहुँ। बाहर क्यो एक चुल्ही धरा देने छल—चारूकात धुइआ सँ भरल छल। घर मे ढुकैत काल माथ मे चोट लागल। देखलहुँ माथ बिना झुकैने क्यो ढुकि नहि सकैत अछि। भीतर ढुकि कए एकटा स्पष्ट कातर स्वर सुनि रहल छलहुँ। नीक जकाँ तकलहुँ चारूकात त देखलहुँ जे एकटा नारी बिछौना पर पड़ल यन्त्रणा सँ छटपट क' रहल छथि। मोहन काका हुनका सान्त्वना द' रहल छलाह। और देखलहुँ, एकटा कमे उमर क लड़की मोहन काका कें अबैत देखि ओहि नारी कें छोड़ि कए घर क एक कोना मे राखल खाली डिब्बा सँ ताकि-ताकि कए छाओर निकालबा क चेष्टा करैत छल। ओ हमरा दिसि, हमर पोशाक दिसि घृणा क दृष्टि सँ देखि रहल छल आ' काका सँ किछु कहि रहल छल। ई सब दृश्य देखि कए हम बाहर आबि गेलहुँ। मोहनो काका धड़फड़ायल बहरैलाह। तकर बाद दुनू गोटे गाड़ी मे चुपचाप रहलहुँ। ओही दिन हम बुझलहुँ, गरीबी किताबे मे नहि—हमर चारू कात क घरो मे छल,

बारह मास।

सती—कियैक ?

कमल—हुनका देहक एक दिसि लकबा मारि देने छलन्हि। बाजबो भूकब हुनका सँ नहि होइत छलन्हि। हम पास जाइत छलहुँ त बस आँखि सँ टपटप नोर चूबै लगैत छलन्हि। हुनका ई बीमारी जखन नहि छलन्हि तखन वैह ड्राइवर कें मोहन 'काका' कहब सिखौने छलीह—नहि त, बाद मे सुनने छलहुँ, बाबू जी कें सेहो ई पसिन नहि छलन्हि। [किछु काल चुप्पी लगा कए] हँ, जे कहैत छलहुँ। एहिना, जखन हम आठम कि नवम कक्षा मे पढ़ैत छलहुँ, तखन एक दिन एक अद्भुत घटना भेल। आ' हमर सबटा प्रश्न क जन्म भेल ओही घटना क बाद।

नाट्यकार—की छल ओ घटना ?

कमल—एक दिन मोहन काका क संग गाड़ी मे घुमबाक लेल निकलल छलहुँ। एम्हर ओम्हर द' कए घुमबाक बाद हम कहलहुँ जे काका, आब हमरा शहर क दोसरो रास्ता देखाउ। ई मैदान, ई नदी क किनारा—ई सब त बड़ पुरान भ' गेल अछि। तीन चारि बेरि जखन से कहलहुँ, तखन ओ हमरा नव-नव रास्ता सँ ल' चललाह। एक जगह गली दिसि देखा कए ओ कहलन्हि—इयैह थीक ओ बस्ती, जतय हम रहैत छी। बस, हम तखन जिद् धैलहुँ, जे हम हुनक घर देखब, घर मे के-के अछि से सब देखब। ओ डरि गेलाह आ' हमरा कतबो बुझैबाक चेष्टा कैलन्हि, मुदा हम से सब किछु सुनबाक लेल तैयार नहि भेलहुँ। तखन बाध्य भ' कए ओ हमरा ओही गली द' कए ल' गेलाह। हम ओही दिन पहिल बेर सँ सब किछु देखलहुँ, जे हम कहियो ने सोचने छलहुँ, ने देखने छलहुँ।

सती—की देखलहुँ ?

कमल—मोहन काका क घर पहुँचबा सँ पहिनहि ओहि गली से देखलहुँ—

हमरे पता नहि छल। तकर बाद हमर मन मे प्रश्न उठल—'कियैक ? कियैक ई सब गरीब अछि ? हम सब कियैक एहन नहि छी ?' तीन-चारि वर्ष बीति गेल एकर उत्तर क खोज मे घुरैत-घुरैत। तकर बाद कालेज मे गेलहुँ, आ' ओतय परिचय भेल अजित आ' प्रीति सँ।

नाट्यकार—ओ सब के छलाह ?

कमल—[हँसैत] हमर नाटक क दू पात्र। हमरहि संग एकहि कौलेज मे पढ़ैत छलाह। हमर खोज मे ओ सब हमरा मार्ग देखौने छल। [किछु काल निःशब्द रहबा क बाद] एक दिन हम, प्रीति आ' अजित कौलेज क बाद कत्तहु घूमै गेल छलहुँ, शहर सँ बाहर। हम ओहि जगह सँ परिचित नहि छलहुँ, मुदा ओतहुका सौन्दर्य हमरा नीक लगैत छल। जतय पहुँचल छलहुँ ओ छल एकटा पुरान जराजीर्ण महल। तखन ओतय हमही तीन गोटे छलहुँ—आर क्यो नहि देखाइ पड़ैत छल। ध' लियह, अनिरुद्ध थीक अजित आ' सती छथि प्रीति। [नाट्यकार माथ हिला कए अपन सहमति प्रकट करैत मंच क एक कोना मे आबि जाइत छथि। कमल अपन कहानी कहैत दर्शक क दिसि आगाँ बढ़ैत छथि।] तखन हम ठाढ़ किछु सोचि रहल छलहुँ, प्रीति एक कुर्सी पर बैसल किछु पढ़ि रहल छल आ' अजित सरोजित जकाँ पदचारणा क' रहल छल। [एतबा क कहबा क संगहि संग प्रीति एकटा कुर्सी ल' कए बैसि जाइत छथि, अजित पदचारणा करै लगैत छथि। मंच क आलोक धीरें-धीरें मद्धिम भ' जाइत अछि। एहि बीच नाट्यकार प्रस्थित होइत छथि।]

अजित—कमल !

कमल—[कनेक चौंकैत] एँ ?

अजित—की सोचि रहल छह ?

कमल—सोचि रहल छी, दिन त शेष भ' रहल अछि......।

अजित—त की ?

कमल—फेरो जाय पड़त अपन घर मे......

अजित—[हँसैत] घर नहि, कहह, प्रासाद मे—

प्रीति— [अपन पुस्तक कें बन्द करैत] हँ, विशाल राजप्रासाद मे, किला सेहो कहि सकैत छी। नहि कमल ? [हँसि दैत छथि]।

कमल—नहि प्रीति, ई हँसबाक विषय नहि थीक। जहिया सँ आँखि खुजल, तहिये सँ हम प्रति पल प्रति दिन कोना क ओहि महल मे दिन बिता रहल छी, से हमहीं जनैत छी।

अजित—कमल, हम त तोरा बहुत दिन पहिनहि सँ कहि रहल छियन्हु छोड़ि दे.........

कमल—तोरा लेल कहब आसान छँह, कारण तों सत्ते अपन घर-परिवार कें छोड़ि कए पार्टी लेल काज करैत छह।

अजित—त तौंहू करह ने। हम सब त तोरा चाहते छी।

कमल—सैह जौं सत्य थीक, त आइ धरि पार्टी क कोनो मीटिंग मे हमरा कियैक नहि आबै देलक ?

अजित—कमल, ककरा कोन अधिकार देल जैतैक, ककरा कोन लक्ष्य सँ पठाओल जैतैक, से सब निर्देश ऊपर सँ अबैत छैक। तोहर विषय मे हमरा जेहन निर्देश भेंटल छल, तहिना कैलहुँ।

कमल—ओ ! हमरा सँ तोहर सैह सम्बन्ध छह जे—।

अजित—[कमल कें टोकैत] बहुँ कमल, भूल क' रहल छह। राजनीति मे ऐबाक बाद किछु शब्द, किछु सम्बन्ध निरर्थक भ' जाइत छैक। जहिया सँ हम पार्टी मे ऐलहुँ, तहिया सँ हमर माय, बाबू जी, भाइ, बहिन, मित्रहु सँ बड़ थीक हमर पार्टी आ' तकर निर्देश।

कमल—तकर माने तों हमर मित्र नहि छह ?

अजित—ओ हो ! हम तोरा कोना बुझाबी जे......तों हमर मित्र छह, जेना एहि पृथ्वी क समस्त श्रमिक, किसान हमर मित्र छथि।

प्रीति—[एतबाक देर धरि दुनू क कथोपकथन सुनि कए] माने इयैह जे

अजित बाबू पर कमल बाबू क तेहने अधिकार छन्हि, जेहन प्रीति पर कमल बाबू क छन्हि—बस, ककरहु सँ ककरहु कोनो विशेष मित्रता नहि रहि सकैत छैक। बुझलियैक ? [कमल सँ पूछैत छथि। कमल एकटक प्रीति क दिसि देखैत रहि जाइत छथि] की, नहि बुझलियैक ?

कमल—[माथ हिलबैत] बुझलहुँ।

प्रीति—अजित, आइ बड़ देर भ' रहल अछि।

कमल—हँ, अजित। जखन घुरै पड़बे करत, तखन देर क' कए लाभे की ?

प्रीति—माने ? [एक बेरि कमल आ' एक बेरि अजित कें देखैत छथि।]

अजित—[किछु काल चुप रहि कए] आइ हम सब घुरब नहि कमल।

कमल—से की ? [कमल डरें चारू कात देखैत छथि।]

अजित—[उच्च स्वरें हँसि दैत छथि] कियैक ? तोरा डर होइत छह ?

कमल—नहि......ड-डर कथीक ? मुदा एतय रहब कियैक ?

अजित—तों की बुझलह हम सब घुमै आयल छी ?

कमल—[आश्चर्य सँ] तखन ?

अजित—तों कोना सोचि लेलह कमल जे अपन मूल्यवान समय नष्ट क' कए तोरा ल' कए हम सब एतय घुमै आयब !

प्रीति—हम सब एतय एकटा काज सँ आयल छी।

कमल—काज सँ ? कोन काज सँ ?

अजित—से किछु कालक बाद पता चलबे करतह। एखन मात्र एतबाक कहि सकैत छियह जे तोरो एतय पार्टिये क निर्देश सँ आनल गेल अछि। एतबा कहबाक बाद पुनः सब क्यो निःशब्द भ' जाइत छथि। मंच पर अत्यन्त अल्प आलोक पसरल छल, जाहि सँ परिवेश रहस्यावृत जकाँ लागि रहल छल एवं पात्रसब पहिलुके जकाँ ठाढ़, बैसल आ' पदचारणा करैत छलाह। दू एकटा नढ़िया, कुकुर आ' किछु विचित्र पक्षी क चीत्कार भासल अबैत अछि।]

प्रीति—आइ ओ सब किछु बेसिये देर क' रहल छथि। एहन त कहियो

नहि होइत छल। की बात थीक ?

अजित—नहि, एहन त नहि हैबाक चाही। [अपन घड़ी क दिसि देखैत] आब त हमरो दुश्चिन्ता होमय लागल। चलह, कनेक आगाँ बढ़ि कए देखैत छी। [पुनः कमल क दिसि देखैत] नहि, तों रहह। हमहीं देखि रहल छी जे आन कोनो साथी आयल छथि वा नहि।

प्रीति—[हँसैत] कियैक हम सब नहि रहब, त कमल डरि जैताह की ?

कमल—एहि मे डरबाक कोन प्रश्न उठैत छैक ?

अजित—प्रीति, कमल कें त डर हैबे नहि करतैक। अहाँ डरि सकैत छी। [एहि बात पर प्रीति आ' अजित दनू हँसि दैत छथि। कमल चेष्टा क' कए हँसैत छथि म्लानरूपें] अच्छा, तँ हम आबि रहल छी, कनेक खोजि कए। [अजित मंच सँ निष्क्रान्त होइत छथि।]

कमल—[अजित क निष्क्रान्त हैबाक बाद प्रीति पुनः अपन हाथ मे धरल पुस्तक मे मनःसंयोग करैत छथि। कमल पहिनुके जकाँ किछु काल चुप भए ठाढ़ रहैत छथि, मुदा अस्थिर चित्त जकाँ बार-बार प्रीति दिसि देखैत छथि। तकर बाद घूरि कए प्रीति क पाछाँ जा कए दुइ-एक बेर पदचारणा करैत छथि और पुनः जेना साहस-संचय क' कए कहैत छथि] प्रीति !

प्रीति—[प्रीति एकटा चेन्ह राखि कए पुस्तक कें बन्द क' कए कहैत छथि] बाजू।

कमल—[प्रीति आँखि उठा कए जखन सँ कमल दिसि देखब शुरू करैत छथि, तखनहि सँ कमल जेना मन्त्रमुग्ध भ' जाइत छथि।] म्-माने... [कहि कए पुनः चुप भ' जाइत छथि]

प्रीति—की भेल।

कमल—[दीर्घश्वास त्यागि] नहि, किछु नहि। [माथ झुका लैत छथि।]

प्रीति—[हँसैत] की बात थीक ? ई दीर्घश्वास, ई माथ झुका लेब। की भेल अछि अहाँ कें ?

कमल—प्रीति......प्रीति, की बात थीक से अहाँ किछु नहि बुझि रहल छी ?

[कमल आहत होइत छथि ।]

प्रीति—[पुस्तक कें एक दिसि धरैत उठि कए ठाढ़ होइत छथि, मुख गम्भीर छन्हि] एहि सभक जे अर्थ होइछ से नहि होमै त सैह नीक।

कमल—[दुःख सं उद्विग्न स्वरें] सती !

प्रीति—[कमल क दिसि माथ उठा कए देखैत] हँ, कमल बाबू । समस्त आशा-आकांक्षा जकाँ हमर प्रेमो पार्टिये पर अर्पित अछि।

कमल—[उत्तेजित भए] ओफ ! पार्टी-पार्टी-पार्टी ! कियैक ? हमर अहाँ क अस्तित्व क कोनो मोल नहि ? हमरा सब कें हँसबा-कानबा क कोनो अधिकार नहि ?

प्रीति—अपना लेल नहि ; हम सब जे करैत छी पार्टिये क लेल करैत छी !

कमल—तखन हमर पिताजी क बनाओल किला क संग एहि पार्टी क बनाओल किला क अन्तरे की रहल ? ओत्तहु हम कानि नहि सकैत छलहुँ, एत्तहु......

प्रीति—झूठ ! ओतय अहाँ कें कानबाक सुयोग नहि भेंटल। से भेंटने त अहूँ अपन माय जकाँ...... [वाक्य कें अद्धं समाप्त राखि कए चुप भ' जाइत छथि।]

कमल—ठीक अछि। मानि लेल जे पार्टी हमरा सब कें कोनो किला मे बन्द नहि कैने अछि। मुदा कनेक नीक जकाँ सोचि कए हमरा कहू त प्रीति दाइ—जौं अहाँ हमरहि सँ प्रेम नहि क' सकैत छी, त देश सँ कोना करब ?

प्रीति—[हँसैत] हम दोसरे दिसि सँ सोचैत छी कमल बाबू। हम अहाँ सँ, [दर्शक मे सँ किनकहु दिसि देखा कए] हिनका सँ, हुनका सँ...... वा ध' लियह अजिते सँ जौं प्रेम करैत रही, त देश सँ कोना प्रेम क' सकैत छी ?

कमल—ओ ! तखन अहाँ कहै चाहैत छी जे अजित क अहाँ सँ कोनो

सम्बन्ध नहि अछि ?

प्रीति—हँ, रहत कियैक नहि। ओहो हमर मित्र छथि, जेना अहाँ......

कमल—बस ? और कोनो सम्बन्ध नहि ?

प्रीति—हँ, सम्बन्ध आरो एकटा अछि। जखन हमर शरीर कें भूख लगैत अछि, तखन से भूख हम अजित सँ वा पार्टी क कोनो मेम्बर सँ मेटा लैत छी।

कमल—[चीत्कार क' उठैत छथि] प्रीति ! अहाँ......अहाँ.........

प्रीति—हम प्रीति छी, कमल। हमरा भूख लगैत अछि त हम तकर निवृत्ति करैत छी। हम कोन अन्याय करैत छी ?

कमल—मुदा प्रीति, मात्र देहक लेल अहाँ अजित सँ......?

प्रीति—मात्र देह क लेल नहि, पार्टियोक लेल। अजित एक नाम थीक कमल बाबू। हुनक नाम कमलो भ' सकैत छल वा ओहूँ अजित भ' सकैत छलहुँ।

कमल—न...नहि ! नहि, बस......आब हम किछु नहि सुनै चाहैत छी प्रीति दाइ !

प्रीति—अहाँ गोसा गेलहुँ ? एहि मे गोसैबाक कोन बात छल ? [हँसि दैत छथि।]

कमल—अहाँ......अहाँ क कोनो रुचि नहि अछि प्रीति ? हम सब की पशु थिकहुँ ?

प्रीति—हँ, ठीके कहलहुँ। हमरा सब कें जखन भूख लगैत अछि, तखन हम सब पशुऐ भ' जाइत छी। हम अपन माय कें तहिना देखने छी आ' नौकरी चलि गेलाक बाद जखन भूखल रहै पड़ैत छलन्हि तखन बाबूओ जी मे सैह पशुता देखने छी। कमल बाबू, तखन हमरा सभ क कोनो रुचि नहि छल। हम सब देखैत नहि छलहुँ—ई मांस थीक वा तरकारी, रोटी वा चाउर, टटका वा बासी, जूठ थीक वा नहि। रुचि तकरे होइत छैक, जकरा पास पाइ रहैत छैक, खाद्य रहैत छैक,

जकरा चक्रकाल हजारो शरीर रहैत छैक। अहाँ ने हमरा चिन्हलहुँ, ने हमर समाज कें। हम प्रीति छी कमल बाबू, अहाँ क ड्राइवर मोहन काका क कन्या, जिनका अहाँ क बाबू जी बाद मे लालि मारि कए भगा देने छलथिन्ह।

कमल—अहाँ सेह छी?

प्रीति—नहि कमल, हम बहुत बदलि गेल छी। [चुप रहि कए] अहाँ आबहुँ हमरा सँ प्रेम करैत छी? [कमल माथ झुका लैत छथि।] उत्तर दियह? [कमल कें तथापि निरुत्तर ठाढ़ देखि कए] अहाँ भरिसक हमरा सँ घृणा करब शुरू क' देलहुँ। से अहाँ सन लोग क लेल स्वाभाविके थीक। अहाँ हमरा सँ जे किछु सुनलहुँ, तकर बाद त हमरा संग कोनो सम्बन्ध नहि राखै चाहब ने?

कमल—से कियैक? सम्बन्ध त रहबे करत। हमहुँ त आब अहीं क पार्टी क सदस्य छी।.........किन्तु।

प्रीति—किन्तु की?

कमल—किन्तु अहाँ आन कोनो पार्टी मे कियैक ने गेलहुँ जतय कतेक और विशदता.........?

प्रीति—कैक पार्टी मे गेलहुँ। कैक घाट क पानि पीलहुँ। सभक एकहि थालि एकहि स्वाद। सब पार्टी क नेता सब कें चाही अपूर्व सुन्दरी अप्सरा सन स्टेनो आ' सेक्रेटरी; सब कें चाही चेला-चामुंडा सब कें फँसैबा लेल इन्द्र-धनुषी रंग क जाल!

कमल—भ' सकैछ, अहाँ अतिरंजित पक्ष मात्र देखि सकलियैक! चरित्र-वानो लोग ....

प्रीति—नहि कमल बाबू। चरित्र आब कतय रहलैक? सभक लक्ष्य छन्हि कांचन, कादम्ब और कामिनी। करोड़ मे एकाध गोटे जे चरित्रवान छथियो त हुनका ओहि ठाम अपनहु परिवार क लेल फुटहो धरि नहि जुटैत छन्हि। ओ आन कें कतय सँ आश्रय द' सकैत छथि? सब

दरबाजा खटखटा कए तखन हम एतय आयल छी।

कमल—[अर्थ-पूर्ण दृष्टिएँ देखि कए मुसकुराबैत] तखन हम देखि रहल छी जे जतय अहाँ छी ततय आबि कए हमहूँ कोनो भूल नहि कैने छी !

प्रीति—भूल कैलहुँ कि ठीक कैलहुँ, से प्रश्न त आब उठते नहि अछि। एतय इच्छा और रुचि क अवकाशे कतय.........? [तावत् कोलाहलक शब्द सुनना जाइछ। क्यो-क्यो कहैत छथि—'इयैह एम्हरे...... हँ-हँ... एहि दिसि चलू......एही दिसि'—इत्यादि। प्रीति आ' कमल दुनू चकित भ' उठैत छथि। तखनहि मंच पर माधव बाबू क भूमिका मे नाट्यकार, अजित क भूमिका मे अनिरुद्ध, आ' आरो पाँच-दस गोटे प्रविष्ट होइत छथि। माधव, अजित, कमल आ' प्रीति कें छोड़ि कए बाकी व्यक्ति मंच क सीढ़ी सँ नीचाँ उतरि कए दर्शक क आसन मे बैसि जाइत छथि।]

अजित—माधव बाबू ! इयैह छथि कमल, हमरा सभ क नव साथी। आइ सँ ओ हमरहि सभ क ग्रुप मे रहताह—सेन्ट्रल कमांड सँ हमरा इयैह आदेश भेटल अछि।

माधव—हँ-हँ, से हम जानैत छी। [कमल सँ] नमस्कार।

कमल—[हाथ उठा कए माधव बाबू कें नमस्कार करैत अजित सँ पूछैत छथि] हिनक परिचय त नहि देलहुँ।

माधव—[हँसैत] अपन परिचय हम अपनहि दैत छी। हमर नाम माधव मिश्र। एहि ग्रुप कें चलैबाक भार एखन हमरहि पर पड़ल अछि।

कमल—अहाँ क नाम त हम सुनने छी।

अजित—कतय ?

कमल—कॉलेज मे कोनो-कोनो मित्र क मुँहें......तकर बाद, ओहि दिन एक अखबार क निबंध मे सेहो......

माधव—तखन त देखैत छी, हम एक विख्यात व्यक्ति भ' उठल छी, एँ ?

[हँसि दैत छथि ।]

अजित—[व्यंग्यात्मक स्वरें] हँ, कोनो-कोनो नेता क नाम त कखनहु-कखनहु पार्टियो सँ बेसी भ' जाइत छन्हि ।

माधव—[प्रीति सँ] आइ कालिह देखैत छी अजित हँसिओ-ठट्ठा नहि बुझैत छथि । [अजित एहि बात पर रुष्ट होइत छथि । प्रीति एक बेरि माधव बाबू आ' एक बेरि अजित दिसि देखैत छथि ।]

कमल—हम सब आइ अधीर भ' कए अहाँ सभक प्रतीक्षा करैत छलहुँ ।

माधव—हँ, हमरा सब कें किछु देर भ' गेल आबै मे ।

प्रीति—से कियैक ? अहाँ कें त कहियो एत्तेक देर नहि होइत छल !

अजित—[व्यंग्य करैत] आब विख्यात भ' गेल छथि, तैं......

माधव—[ठहक्का पाड़ैत] नहि, देखैत छी अजित एखनहु किछु-किछु ठट्ठा करैत छथि ।

अजित—महाजनः येन पथेन गतः स पन्था ।

प्रीति—ई सब त हैते रहत । मुदा, एखन हम सब जाहि काजक लेल आयल छी, से......

माधव—अवश्य, अवश्य ! देर त केवल एहि लेल क' रहल छलहुँ जे और किछु गोटे आबि जाथि, किन्तु एम्हर त देखैत छी जे [दर्शक-वृन्द दिसि देखबैत कहैत छथि] बहुत लोग जमा भ' गेल छथि ।

प्रीति—सब सँ पहिने की हैत ?

अजित—अहाँ पहिने एतय उपस्थित सब सदस्य लोकनि सँ माधव बाबू क परिचय करा दियन्हु ।

प्रीति—[मंच क सम्मुख भाग मे ठाढ़ भए प्रेक्षकवृन्द दिसि देखैत] साथी लोकनि, आइ अपने लोकनि क समक्ष हमरा सभक जनप्रिय नेता एवं पूर्वांचलक प्रधान ई [माधव बाबू दिसि इंगित करैत] माधव बाबू ठाढ़ छथि । नवीन साथी लोकनि क जानकारी क लेल ई कहब आवश्यक अछि जे हमरा सभक ग्रुप क समस्त काज क दायित्व केन्द्र क दिसि

सँ हिनकहि देल गेल छन्हि। आइ पार्टी क अगिला कार्य-क्रम क विषय मे ई किछु कहताह।

माधव —[कनेक विहुँसैत प्रीति सँ] अहाँ त ततेक ने बढ़ा कए... [लगलहि प्रेक्षक-वृन्द दिसि घुरि कए] बन्धुगण, सेंट्रल कमांड क ई निर्णय छैक जे बाहर सँ देखबा क लेल देश-कालानुसार जनतन्त्रवाद, अहिंसावाद वा आन कोनहु वाद क दोहाइ भनहि द' देल जाय, किन्तु आन पार्टी सभक रबैया एवं देश क हवा कें देखैत ई आवश्यक अछि जे हमरा लोकनि क पार्टी मे सशक्त तथा कठोरतम अनुशासन हो। सम्प्रति केन्द्रीय कमांड क निर्णय ई भेल छैक जे पार्टी क और विस्तार कैल जाय। शहर मे रहनिहार विरोधी नेता और कार्यकर्त्ता सभक भार सँ पृथ्वी कें हल्लुक करबा मे हमरा सब कें नीक सफलता भेंटल, किन्तु हम सब कि मात्र एतबहि सँ सन्तुष्ट रहब ? [एक बेरि चारू कात देखि कए] नहि ; हम नहि रहब। कारण, ताहि सँ पार्टी क व्यापकता मे बाधा हैत और सत्ता सँ दूरत्व बढ़ैत जायत। जाहि देश क अस्सी प्रतिशत निवासी किसान अछि, ताहि देश मे आन्दोलन करबाक लेल हमरा सब कें गाम-घर दिसि बेसी दृष्टि देमै पड़त। समस्त शोषक-वर्ग सँ एहि धरती कें मुक्त क' देमै पड़त।

अजित—[बाधा दैत] से त नीक। मुदा केन्द्रीय नेता लोकनि क जे विचार हालहु मे प्रकाशित भेल छन्हि ताहि सँ त एहि मे विरोध प्रतीत होइछ।

माधव—अजित, जखन नाव डूबै लगैत छैक तखन माँझी कें नाव खेबैक नियम आ' उपाय पर रिसर्च करबा क समय नहि रहि जाइत छैक।

प्रीति—ई की कहैत छी ? तकर अर्थ ई जे हमरा सभक चेयरमैन क निर्देश सँ चलि कए ई पार्टी डूबि रहल अछि ?

माधव—थियोरी नीक वस्तु थीक प्रीति, जौं तकर प्रयोग देखि कए तकरा पर पुनः विचार कैल जाय। आन-आन देश मे जेना विप्लव भेल

छल, हमरहु देश मे तहिना हैत, तकर कोन ठेकाना ?

अजित—मुदा ताहि लेल पार्टी लाइन कें बदलै पड़त, थियोरी कें बदलै पड़त।

माधव - हम त ई नहि कहि रहल छी जे थियोरी कें एना बदलू जाहि सँ पार्टी आमूल बदलि जाय।

अजित— जखन तर्क करब अहाँ कें पसिन नहि, तखन तर्क नहि करब, मुदा हमर एकटा प्रश्न क उत्तर दियह।

माधव—[हँसमुख भए] कहू !

अजित—अहाँ वर्त्तमान पार्टी लाइन सँ हँटि कए हमरा सब कें जे निर्देश द' रहल छी, तकर पालन हम सब करब। मुदा जौं पार्टी हमरा सँ, हिनका सँ वा हुनका सँ तकर कैफियत माँगै, तखन...... ?

माधव—कैफियत देबाक काज हमर थीक, कारण अहाँ सभक समस्त काज क लेल दायी छी हम।

अजित—बेस ! तखन त कोनो समस्ये नहि......। [प्रीति दिसि एक बेरि तिर्यक दृष्टियें देखैत चुप भ' जाइत छथि।]

प्रीति—तखन हमरा सभक काज की हैत ?

माधव—प्रथम काज हैत गाम सँ घनिष्ठ परिचय प्राप्त करब।

कमल—कैलहुँ ; तकर बाद ?

माधव—तकर बादे हम सब कोनो काज शुरू क' सकैत छी। [किछु काल चुप रहि कए। तकर बाद शोषक सब कें खतम करबाक लेल गामक शोषित मजदूर-किसान सब कें हाथ मे लेमै पड़त। ई सब सबदिन अन्हारे मे रहैत छथि। [कहबाक संगहि संग मंच क मद्धिम आलोको अदृश्य भ' जाइछ।] हिनका सब कें आलोक मे आनब भेल हमरा सभक सब सँ प्रधान, सब सँ कठिन काज। [माधव बाबू पर अलपरेख पड़ैत छन्हि। अन्यान्य पात्र सब अदृश्य भ' जाइत छथि।] मन राखब, सब सँ अन्तिम स्टेज भेल जमीन्दार आ' महाजन सभक गर्दनि

कें देह सँ पृथक क' देब [किछु काल चुप रहि कए] ककरा कतय जाय पड़त, ककरा ऊपर कोन काज क भार रहत—तकर निर्देश देल जायत अगिलका मीटिंग मे। एहि समय क मध्य कोन-कोन गाम कें सब सँ पहिने एहि काज क हेतु लेल जाय तकर विचार करब। जौं अहाँ सभक कोनो समस्या होमै, त उचित जरिया सँ हमरा लग आबि सकैत छी। अच्छा, [चारूकात देखि कए] त हम एखन बिदा हैब। विरोधी सभक नजरि तेज अछि। तैं अहूँ सब सावधान रहब। [अलपरेख मिझा जाइत अछि। माधव बाबू अदृश्य भ' जाइत छथि। नेपथ्य सँ एकटा कोलाहल क शब्द धीरे-धीरे बढ़ैत भासल अबैत अछि, जाहि मे कखनहु-कखनहु आर्त्त चीत्कार क शब्द सेहो मिश्रित रहैत अछि—कखनहु 'दुनिया क श्रमिक-किसान एक होउ।' आदि नारा सुनना जाइत अछि। तकर बाद धीरे-धीरे कोलाहल क स्वर मद्धिम भ' जाइछ। अल्प आलोक द्वारा मंच कें रहस्यमय जकाँ देखाओल जाइछ। मंच पर अजित आ' कमल उपस्थित रहैत छथि। कमल एक कोना मे चुपचाप ठाढ़ किछु सोचैत छथि आ' अजित अस्थिर चित्तें पदचारणा करैत कखनहु-कखनहु कमल दिसि देखैत छथि।]

अजित—[पदचारणा करैत-करैत अकस्मात् एक बेरि थम्हैत] कमल !

कमल—कह !

अजित—तों एखनहि कैक बेरि पूछने छलह जे हम तोरा आइ एतय कियैक बजौने छी।

कमल—तकर उत्तर एखन धरि तों नहि देने छह।

अजित—कमल, तोहर काज सँ पार्टी मे असन्तोष नहि छैक, मुदा सेन्ट्रल कमाण्ड पूर्णरूपेण सन्तुष्ट सेहो नहि अछि।

कमल—कियैक ?

अजित—कहैत छियह। जहिया तोरा पहिल बेरि पार्टी क मीटिंग मे अनलियह, तहिया सँ आइ धरि क समय मे तों छोट-बड़ कैकटा

ऐकशन मे भाग अवश्य नेने छह—मुदा तोहर दूटा दोष सभक नजरि मे खटकैत छह। [अजित अकचकाइल छथि।]

कमल—हँ-हँ, कहैत जा!

अजित—पहिल, तोहर नजरि रहलह प्रीति दिसि—आ' सब क्यो ई बात जानैत छथि।

कमल—प्रीति क दिसि हमर नजरि अवश्य पड़ल छल। मुदा से आइ सँ नहि बहुत दिन पहिनहि सँ।

अजित—ई पार्टी क डिसिप्लिन क बाहर क गप थीक कमल। पहिने कहिया की भेलह से हम सब ने जानैत छी, ने जानै चाहैत छी। मुदा एखन तोरा प्रीति सँ दृष्टि हँटाबै पड़तह।

कमल—[कनेक क्रुद्ध भ' कए] प्रीति पर त तोरो नजरि छह। तों कि बुझैत छह जे हम से नहि जानैत छी?

अजित—[उच्च स्वरेँ हँसि दैत छथि] प्रीति पर हमर नजरि अछि? से त तोरो पर अछि, युनिट क आनो साथी सब पर अछि। हमरा प्रीति सँ ने प्रेम अछि, ने प्रीति।

कमल—प्रीति क देहो सँ नहि? [कमल सन्देहात्मक दृष्टियेँ अजित क दिसि देखैत छथि।]

अजित—[पुनः उच्च स्वरेँ हँसि दैत छथि] आब बुझलियह तोहर सन्देह क कारण! प्रीति हमरा सँ सब किछु कहि देने छथि।

कमल—की?

अजित—[हँसि कए] जे कोना तों प्रेम-निवेदन केलह आ' कोना ओ तोहर हाथ सँ मुक्त भेल। [कमल माथ झुका कए ठाढ़ रहैत छथि।] भरिसक तैँ तों हमरा पुछलह जे प्रीति क संग हमर देह क सम्बन्ध अछि वा नहि। [हँसि दैत छथि।]

कमल—से कि फूसि थीक?

अजित—नहि त की? ओ त प्रीति तोहर परीक्षा लेबाक लेल कहने छलह।

कमल—तखन..... तखन......

अजित—[कनेक कठोर स्वरें] तखन किछु नहि कमल। प्रीति कें तों बिसरि जाह। विप्लवी कें कोहबर क गीत नहि, बन्दूक क गीत क पता रहबाक चाही। [पद्चारणा करैत] और तों अपन दोसर दोष द' त सुनबे नहि कैलह। सुनह, पार्टी कें तोरा पर सन्देह छैक......

कमल—[चौंकैत] की ? कियैक ?

अजित—कारण, एखन धरि तों जतय ऐकशन मे भाग लेलह, ततय कोनहु टा मे विशेष कोनो कृतित्व नहि देखा सकलह।

कमल—हम त......हम त गेल छलहुँ।

अजित—हँ, गेल त छलह। मुदा जखन तोरा कोनो विशेष काज करबाक लेल आन कोनो साथी कहलकह तखन तों कोनो-ने-कोनो बहाना बना कए.....

कमल—हमरा सँ ककरहु खून करब, ककरहु घर लूटब नहि होइत अछि।

अजित—[व्यंग्य करैत] ओ ! तखन तों पार्टी क आदेश नहि मानै छह ?

कमल—हम चाहैत छी......मुदा

अजित—जौं चाहैत छह, त ताहि मे मुदा क कोनो स्थान नहि छैक। सैह टा नहि, तोरा एहि बात क प्रमाण देमै पड़तन्हु जे तों पार्टी क आदर्श पर विश्वास रखैत छह।

कमल—तकरा लेल हमरा की करै पड़त ?

अजित—जे कहबह से क' सकबह ?

कमल—पार्टी क विश्वास आ' आदर्शक लेल हम सब किछु क' सकैत छी। हम कापुरुष नहि छी।

अजित—[विचित्र जकाँ हँसि कए] हम जनैत छी जे तों कापुरुष नहि छह। तोरा माधव मिश्र कें खून करै पड़तह—।

कमल—[चौंकैत] नहि-नहि......ई की ?

अजित—बस ? एतबहिटा मे पुरुषत्व भसिया गेलह ?

कमल--ओ की कैलन्हि ? ओ त हमरा सभक नेता छथि।

अजित--ओ पार्टी क सिद्धान्त क विरुद्ध अपन दल सँ काज ल' रहल छथि। आ' ताहि लेल पार्टी क इमेज नष्ट भ' रहल अछि।

कमल--किन्तु ताहि लेल खूने कियैक ? हुनका समझा-बुझा कए.........

अजित--नहि कमल। हुनका समझा-बुझा कए काज लेबाक चेष्टा हम सब बड़ कैलहुँ। जखन हम अन्तिम बेरि हुनका इयैह बात कहै लगलहुँ, त जनैत छह, ओ की कहलन्हि ? [कमल सप्रश्न दृष्टियें अजित दिसि देखैत छथि। मुदा अजित कमल क उत्तर क अपेक्षा बिना कैनहि कहैत छथि] ओ हमरा भर्त्सना करैत हमरा डरौलन्हि जे जौं हम पुनः हुनका एहि विषय पर 'उपदेश' देमै आबी, त ओ हमरा दुनिया सँ हँटा देताह।

कमल--ओ हमरा सभक नेता छथि--।

अजित--[टोकैत] जहन्नुम मे जाओक एहन नेता। तोरा लेल तोहर पार्टी बड़ छह वा नेता ?

कमल--पार्टी।

अजित--मुदा ओहि दिन हम हुनका सँ बात कहलियन्हि त हमरा पर बिगड़ि गेलाह। कियैक त ओ चाहैत छथि जे ओ सस्त मे बाहबाही लूटि लेताह, पार्टी क कन्हा पर हर ध' कए ओ अपन खेत जोति लेताह। जौं क्यो जा कए हुनका प्रशंसा करन्हि त हुनका बड़ नीक लगैत छन्हि। ओ......ओ......सीजर भ' गेल छथि कमल। हुनका हटबहि पड़त। तों ई काज क' सकबह ?

कमल--चेष्टा करब।

अजित--चेष्टा नहि, करै पड़तह। जौं तों से नहि क' सकह, त......त--

कमल--त की ?

अजित--त हमरहि हाथें तोरो मरै पड़तह। [कमल चौंकि उठैत छथि] हमरा पर सेन्ट्रल कमांड क तहिना निर्देश अछि।

कमल—ई......ई काज कहिया करै पड़त ?

अजित—आइ, एखनहि। [कमर सँ एकटा चक्कू निकालि कए] इयैह छैतह अस्त्र। गाम सँ बाहर एहि शून्य स्थान मे रिभाल्वर नहिये चलै त नीक। प्रयोजन भेने चलावै पड़तह, मुदा नहिये चलावह त उत्तम। माधव बाबू कें हम एक विशेष प्रयोजनीय काज कहि कए एतय बजौने छियन्हि। ओ एसगरे औताह।

कमल—म्-मुदा......

अजित—मुदा की ? डर होइत छह डर ? [अट्टहास्य करै लगैत छथि।] सुनह ! हम हुनका विषय मे जे कहलियह से सब तों हुनका कहिहन्हु आ तकर बाद—

माधव—[नेपथ्य सँ निम्न स्वर मे] अजित, अजित !

अजित—[मंच सँ निष्कान्त भए माधव मिश्र कें ल' कए पुनः प्रविष्ट होइत छथि] आउ। अहाँ कें कनेक देर भेल; बेसी नहि।

माधव—प्रीति कें बैसा कए आबि रहल छी।

अजित—प्रीति ? प्रीति कियैक आयल अछि अहाँ सँ भेंट करै ?

माधव—अपन युनिट क कार्जे।

अजित—मुदा हम जतबा जानैत छी, ताहि सँ त......

माधव—तों बहुत किछु नहि जानैत छह। तकर बाहरो बहुत किछु होइत छैक, बहुत किछु करै पड़ैत अछि।

अजित—से कोन एहन घटना एही बीच घटि गेल जे......

माधव—ताहि सँ तोरा कोनो प्रयोजन नहि अजित। से सब हम बुझब। तों हमरा कथी लेल बजा आनने छह, से कहह !

अजित—से कमल कहत।

माधव—[कमल दिसि देखैत] कमल ? कियैक ? बजौने त तों हमरा छह। [अजित एक टक देखैत चुप रहैत छथि] की भेल छह ? चुप कियैक छह ?

अजित—सब प्रश्न क उत्तर ने होइत छैक आ' ने हम दैत छी।

माधव—ओ ? त तों हमर अपमान करबा क लेल एतय बजा आनने छह ?

अजित—[हँसैत] नहि, उनटे कहलहुँ। अहाँ कें आइ विशेष सम्मान देबाक लेल एतय बजाओल गेल अछि।

माधव—ओ ! त कोना करबह सम्मान ? [व्यंग्यात्मक कण्ठें] ने फूल छह, ने माला !

अजित—फूल त अछि—कमल। अहाँ क सामनहि। [माधव कमल क दिसि घुरि कए ठाढ़ होइत छथि] कमल ? [इंगित करैत छथि।]

कमल—[गला खखारैत] माधव बाबू ! हम पार्टी क निर्देश सँ अहाँ कें कैकटा प्रश्न करै चाहैत छी।

माधव—तकर पहिने हमहीं एकटा प्रश्न करै चाहैत छी। अहाँ कें कहिया सँ पार्टी निर्देश देमै लागल ? जौं कोनो प्रश्न रहितैक त केन्द्रीय कमांड पहिने हमरहि पूछैत।

अजित—[माधव बाबू क कथन क बाद किछु काल निःशब्द रहि कए] बस ? भ' गेल अहाँ क प्रश्न पूछब ?

माधव—हम कमल सँ पुछने छी। उत्तर हुनकहि सँ चाहैत छी।

कमल—हमरा सेन्ट्रल कमांड सँ कोना आदेश भेंटल, से अहाँ कें सेन्ट्रल कमांड सँ पता चलत।

माधव—हमरा तकर पता नहि अछि आ' तकर माने ई जे अहाँ झूठ बाजि रहल छी......

अजित—नहि, झूठ त अहाँ बाजि रहल छी। [माधव बाबू क दिसि अंगुली निर्देश करैत]

कमल—पहिने हमर प्रश्न सुनि लियह, तकर बाद अहाँ कें जे किछु कहबाक अछि, से कहि सकैत छी।

माधव—पूछू !

कमल—अहाँ अपन प्रभाव क लेल पार्टी क प्रभाव कें नष्ट नहि कैने छियैक ?

अहाँ केन्द्रीय कमांड क निर्देश क लंघन क' कए अपनहि मनें पार्टी क सदस्य सब सँ काज नहि करौने छियैक ?

अजित—और अछि। की अहीं क निर्देशक कारण एहि एक मास मे बीस-पच्चीस गोट सदस्य नहि पकड़ैलाह ? एकर दायित्व कें अहाँ अस्वीकार क' सकैत छी ? की अहाँ दल क और सब सदस्य लोकनिक सुझाव क उपेक्षा नहि कैने छियैक ?

माधव—हम......हम......

अजित—हँ, हँ अहीं। अहाँ दोषी छी। कतेको साथी सभक खून-पसीना बहबा कए एवं खून धरि करबा कए अहाँ अपन नाम कमैबाक चेष्टा कैने छी। सब सँ बड़ अभियोग भेल ई जे अहाँ क विरुद्ध लोह समालोचना केलक, तकरहि अहाँ निर्जन स्थान मे पाछाँ सँ रिभाल्वर चला कए अपनहि हाथें खून कैने छियैक। आब अहाँ क सब बात क पता सब कें चलि गेल छैक।

कमल—एहि अभियोग क कोनो उत्तर अहाँ क पास अछि ?

माधव—से त हम पार्टिये क लेल......।

अजित—हमहूँ सब तहिना पार्टिये कें बचैबा क लेल अहाँ कें एतय बजा अनने छी। [एक दिसि सँ कमल आ' दोसर दिसि सँ अजित हँसैत माधव बाबू दिसि धीरे-धीरे बढ़ैत छथि] अहाँ कें ई जगह पसिन पड़ल माधव बाबू ? [धीरे-धीरे अद्भुत मोलायम स्वरें कहैत छथि] अहाँ क लेल हम बहुत ताकि कए एहन सन एक सुन्दर जगह पौलहुँ। एतबा दिन स हमरा मात्र नीक जगह, नीक समय आ' ठीक व्यक्ति क खोज छल। आइ तीनो भेंटि गेल अछि माधव मिसर। [दुनू कें अगुअबैत देखि माधव बाबू क आँखि मे धीरे-धीरे आतंक क छाया विस्तृत भ' रहल छन्हि।]

माधव—नहि-नहि......ई नहि......

अजित—हँ, इयैह माधव बाबू। [कमल क दिसि देखैत] कमल !

माधव—[कमल क चक्कू माधव बाबू क पेट मे ढुकि जाइत छन्हि।] आः !!! [चीत्कार क संगहि संग अजित एक हाथें माधव बाबू क मुँह दाबि दैत छथिन्ह आ' चीत्कार बन्द भ' जाइछ। धीरे धीरे माधव बाबू निस्तेज भ' नीचाँ खसि पड़ैत छथि। कमल क हाथ मे रक्ताक्त छूरा धरल रहि जाइत छन्हि। किछु काल दुनू चुप रहि जाइत छथि। दूर कत्तहु सँ एकटा नढ़िया क भयावह स्वर भासल अबैत अछि आ' तकर संगहि संग दू-तीनटा पक्षीक भयानक शब्द सेहो सुनना जाइछ। कमल चौंकि कए पाछाँ घूरि कए ठाढ़ होइत छथि—दर्शक क दिसि मुँह कैने। हाथ सँ छुरा शिथिल भ' कए खसि पड़ैत छन्हि एवं तकर शब्द सुनि अजितो पाछाँ घुरैत छथि। प्रीति धीरें-धीरें मंच पर अबैत छथि एवं माधव बाबू क पड़ल लहास क दिसि देखैत छथि। मुदा अजित वा कमल क दृष्टि प्रीति पर नहि पड़ैत छन्हि।]

अजित—[दर्शक क दिसि देखैत विचित्र रूपें हँसैत छथि] हम जीति गेलहुँ

कमल—हम जीति गेलहुँ।

प्रीति—[पाछाँ सँ] हँ अजित बाबू, अहीं क जय भेल। [अजित एवं कमल दुनू चौंकैत पाछाँ घूरैत छथि।]

अजित—अहाँ ?

प्रीति—हँ अजित, हमही छी। हम एहि नाटक क अन्तिम दृश्य धरि देखने छी। [तीव्र स्वरें कहैत छथि] अजित ! माधव बाबू मे किछु दोष त छलन्हि, किछु लोभो छलन्हि—मुदा एत्तेक नहि, जाहि लेल पार्टी क एहि संकट-काल मे हिनका सन वरिष्ठ नेता क हत्या कैल जाइक।

अजित—हमरा केन्द्रीय कमांड सँ निर्देश भेटल छल।

प्रीति—झूठ ! ई एकदम झूठ बात थीक। वरन्, हमरा केन्द्रीय कमांड सँ निर्देश भेटल जे माधव बाबू कें सचेत क' दी आ' अहाँ के........ एतबा मे नेपथ्य सँ एक कोलाहल क स्वर भासल आबैत अछि।]

कमल—अजित ! मात्र अपन स्वार्थ क लेल तों हमरहु सँ......छी-छी-छी-छी हमर हाथसँ ई खून क चेन्ह... [दुनू हाथकें मलैत छथि—रक्त क चेन्ह

छौड़ैबाक लेल। तावत् बाहर कोलाहल क शब्द तीव्रतर होइछ।]

अजित—ई...ई कथी क आवाज थीक? क-के सब आबि रहल छथि?

प्रीति—डरू नहि अजित। आब अहाँ के पार थीक। आब अहाँ कें जाय पड़त।

अजित—[डरि कए] कतय?

प्रीति—पार्टी छोड़ि कए, दुनिया छोड़ि कए आन कतहु......अन्य कोनो जगत मे—। [तावत् कोलाहल क शब्द एक दम पास आबि जाइछ।]

अजित—न-हि !!! [चीत्कार क' कए पड़ैबाक चेष्टा करैत अछि। मंच अन्हार भ' जाइत अछि। कोलाहल क मध्य नेपथ्य सँ एकटा तीक्ष्ण आर्त्तस्वर भासल अबैत अछि। किछु क्षण क पश्चात् सब शब्द बन्द भ' जाइछ। कमल आगाँ बढ़ि कए मंच क एक कोना पर ठाढ़ भ' जाइत छथि। हुनका पर आलोकपात होइत छन्हि।]

कमल—खून जखन शुरू होइत छैक, त तकर अन्त नहि होइत छैक। आ' लहू क रंग एक्के होइत छैक—चाहे ओ महाजन क हो, चाहे माधव मिसर क। माधव बाबू गेलाह, अजित चलि गेल, दल क करोको गोली क शिकार भेल, पकड़लो गेल, जाहि मे प्रीतियो छलीह।

सती—[मंच क अन्य प्रान्त पर ठाढ़ रहैत छथि। हुनको पर आलपरेख पड़ैत छन्हि।] आ' कमल? कमल क की भेल?

कमल--[माथ झुका कए] ओ एक लज्जा क इतिहास छल जखन सब क्यो पकड़ैलाह, हम शहर मे छलहुँ। ओहुना हम पार्टी मे नवे छलहुँ। तैं ने कोनो निबन्ध मे हमर कृतित्व क उल्लेख भेल, ने हम कोनो कृतित्व देखा सकलहुँ। संयहु सब कें पता लागिये गेलैक जे हमहूँ एहि पार्टी मे छलहुँ। जखन चारूकात सँ धड़-पकड़ होमै लागलैक तखन एक दिन हमहूँ तैयार भ' गेलहुँ अपना कें पुलिस क हाथें बलि चढ़ा देबाक लेल। मन मे सोचलहुँ, जे हम अपन नेता क हत्या कैने छी—हमरा हाथ मे खून क चेन्ह लागले अछि—हमरा त दण्ड हैब उचिते थीक। मुदा से नहि भेल।

सती—कियैक?

कमल—पुलिस आयल छल। एकहि मकान सँ हमर संगी- साथी सब कें ल' गेल। हमरो ल' गेल छल। मुदा, हमरा छोड़ि देल गेल।

सती—कियैक? की भेल छल?

कमल—बाद मे पता चलल जे एहि मे हमर पितृदेव क हाथ छलन्हि। एहिना हम अपन प्रश्न क उत्तर खोज करैत-करैत अन्धकार सँ आलोक क जगत मे पहुँचि गेलहुँ। [संगहि संग समस्त मंच आलोकित भ' उठैछ। मंच क एक दिसि कमल आ' दोसर दिसि प्रीति पहिनहि सँ ठाढ़ छथि। तावत् मंच आलोकित हैबा क बाद हुनका दुनू क मध्य नाट्यकार आ' अनिरुद्ध कें दण्डायमान देखल जाइछ। ओ सब कमल क दिसि आगाँ बढ़ैत छथि।] तावत् हमर पहिल प्रश्न पुरान भ' गेल छल, कारण विलास सँ बाहर, प्रासाद सँ बाहर अपन जिनगी जीबैत-जीबैत बुझि गेल छलहुँ जे चारूकात एतेक दारिद्र्य कियैक छैक। आब नव प्रश्न सब हमरहि संग दीर्घपथ पर चलै लागल। कोना एहि गरीबी कें खून क' सकी? कहिया हैत ओ यज्ञ? के देखाओत पथ? हम अपन जीवन क सब सँ नीक मुहूर्त्त सब राजनीति क शतरंज क चालि मे लगा देलहुँ। प्रश्नोत्तर क खोज मे हम तकर बाद दोसरो पार्टी मे गेलहुँ। मुदा ओतहु लोभ-लालसा क कुत्सित चेहरा सब कें देखि पड़ा कए पहुँचलहुँ तेसर कोनो पार्टी दिसि। ओहिना हम पथ क सन्धाने करैत रहि गेलहुँ।

अनिरुद्ध—[म्लान हँसैत] तकर बाद भरिसक देखलहुँ जे हम सब जाहि चौराहा पर पहिने ठाढ़ छलहुँ, ओत्तहि ठाढ़ छी! नहि ओ?

कमल—हँ अनिरुद्ध। ई सब करबा क बाद आइयो देखैत छी दुनिया तहिना चलैत अछि—शोषक आ' शोषित क मध्य महक खाधि तहिना हमरा दिसि मुँह बौने ठाढ़ अछि—ओकर आँखि मे विजय क इंगित छैक। नाट्यकार, अहाँ कहू, तखन हमरा सभक जीवन क की कोनो मोल नहि? हमरा सभक प्रश्न क की कोनो उत्तर नहि!

नाट्यकार—कमल, हमरा त लगैत अछि—क्यो हमरा सब कें ल' कए एकटा भीषण उपहास करबा क लेल किछु प्रश्न हाथ मे धरा कए छोड़ि

दैने अछि आ' सामने राखि देने अछि ओहि प्रश्न सभक असंख्य उत्तर। हमर, अहाँ क अनिरुद्ध क आ' सती क जन्महि सँ जेना क्यो ओहि प्रश्न सभक सही उत्तर खोजवा क आदेश द' देने छल। हम सब एकटा उत्तर कें उठा कए देखैत छी त जेना हमरा सब पर जादू क' दैत अछि, हम सब सम्मोहित जकाँ भ' जाइत छी। आ' तखन तीन-चारिटा पात्र-पात्री मुँह पर रंग पोतने एकटा घटना कें ढोवैत कतय सँ ने चलि अबैत अछि—और शुरू भ' जाइत अछि एक नाटक। फेर, एक नाटक समाप्त हैबाक बाद जखन दोसर उत्तर कें छूबैत छी त शुरू भ' जाइछ दोसर एकटा नाटक। आ' फेरो......

कमल—तखन हम, अनिरुद्ध, सती—हम सब जिनगी भरि की कैलहुँ ?

सती—हमर नोर ? हमर प्रेम ??

अनिरुद्ध—और हमर भूख ? [एतबा कहबा क संगहि संग नाट्य-शालाक आलोक मद्धिम भ' जाइत अछि।]

नाट्यकार—सब वस्तु क अपन-अपन भूमिका क लेल प्रयोजन छल। जन्म क संगहि संग हम सब मंच पर प्रविष्ट होइत छी—हमरा सब पर आलोक पड़ैत अछि। [संगहि संग पात्र सब पर अलपरेख पड़ैत छन्हि।] अपन पार्ट कें नीक जकाँ कण्ठस्थ करबा मे किछु वर्ष बीति जाइत अछि। आ' तकर बाद सँ चलैत रहैत अछि नाटक जकर शेष मृत्यु क बादे होइछ। [तखनहि सब आलोक मिझा जाइछ। नाट्यकार कें छोड़ि आन-आन पात्र सब पर सँ अलपरेख हँटि जाइत छन्हि एवं मंच क अन्यान्य अंश अन्हार भ' जाइछ।]दर्शक बिसरि जाइत छथि ओहि नाटक कें। [हँसैत] मुदा एक ने एक बेर सब कें मंच पर आबै पड़ैत छन्हि, हँसै पड़ैत छन्हि, कानै पड़ैत छन्हि। आइ छलाह सती, अनिरुद्ध, कमल। भरिसक कालिह रहब अहाँ [दर्शक सब मे सँ किनकहु दिसि देखा कए], अहाँ [दोसर दर्शक कें देखा कए], वा अहाँ [तेसर कोनो दर्शक कें देखा कए]। आबै पड़त एतय। कारण हम सब—सब क्यो जीबैत छी एक नाटक क लेल।

समाप्त